किसी भी चीज़ से
वह इतना आकर्षित
नहीं हुआ था जितना
इस नीले पत्थर से।
नीले पत्थर में से
एक ऐसी रोशनी
फूट रही थी...

बाल विज्ञान पत्रिका सितम्बर 2014

चकमक

मूल्य ₹ 30

मेरे प्यारे पापा!

मैं आपसे बहुत प्यार करती हूँ!
मैं कुछ आपसे कहना भी चाहती हूँ!
पापा, मुझे पता है कि
आप भी हम सब भाई- बहनों से
बहुत प्यार करते हैं!

हाँ, पापा!
मैं यह भी जानती हूँ कि
आप कभी-कभी उदास हो जाते हैं!
मैं यह भी जानती हूँ कि
आपकी उदासी का कारण क्या है!

जैसे, आप कभी-कभी हमारी इच्छा पूरी
नहीं कर पाते हैं।
किसी-किसी त्योहार पर हमारे कपड़े
नहीं बना पाते हैं,
आप उदास हो जाते हैं।

हाँ, पापा।
कभी-कभी आप हमें मेला देखने के लिए
रुपये नहीं दे पाते हैं और कभी लिखने-
पढ़ने के लिए
कॉपी-किताबें खरीदकर नहीं दे पाते हैं,
तो आप इसलिए उदास हो जाते हैं!

पापा, मैं आपसे वादा करती हूँ-
मैं पढ़-लिखकर आपकी मदद करूँगी।

नूरेनिशां कक्षा नवमीं में खटीमा, ऊधमसिंह नगर में पढ़ती हैं। ये चिट्ठी उन्होंने अपने मरहूम पिता को लिखी है।

बाल विज्ञान पत्रिका
चकमक
अंक 336 सितम्बर 2014

4 बोली रंगोली
6 पीसा की मीनार पर चढ़कर प्रयोग किसने किया था?
8 एक था हाजी एक था नाजी
10 एक मुलाकात तितलियों के साथ...
14 बिना नाम की नदी
16 मेरा पन्ना
20 नीला पत्थर
24 मन की हर बात इकट्ठी की, एक बात बनाई मिट्टी की
28 पत्ते की बात!
30 वे दिन
32 गुगली
33 सच्ची!
34 दो भाएली
38 बोली रंगोली
39 माथापच्ची
40 नाव
41 मुनिया दीदी, डब्बू और रघु राय
43 चित्रपहेली

हाशिए के चित्र
इन्टरनेट

आवरण चित्र
अतनु राय

सम्पादन
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

सहायक सम्पादक
कविता तिवारी
मिताली अहीर

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
दिलीप चिंचालकर

इस अंक में

4

किताब पढ़ते-पढ़ते एक बार मस्ती में
गिरे नदी में दोनों जा रहे थे कश्ती में
- गुलज़ार

तितली और पुवाड़ का रिश्ता बड़ा गहरा है।
पत्ती कुतरनेवाली इल्लियों का
फूलों पर मण्डरानेवाली
तितलियों से क्या रिश्ता है?
10

दुकानदार का चेहरा एक तरफ से तो
एक युवा लड़की का था,
पर जब वह दूसरी तरफ मुड़ी तो
जो चेहरा नज़र आया वह
एक बूढ़ी औरत का था।
20

24 पकाने के बाद
इसे वापस गीली मिट्टी में
बदला नहीं जा सकता है।
इसलिए हम इसमें
खाने की चीज़ें
रख सकते हैं।

30 मैं बेहद खुश था।
वो मेरी ज़िन्दगी के
सबसे मुश्किल
नौ महीने रहे।
कोई पाँच सौ से
ज़्यादा इंजेक्शन
मुझमें खोपे गए।

34
"वो तो मैं खुद ही
रुककर कान छिदवा रही थी।
बाली पहनने के लिए।
तू क्यों बीच में वहाँ आई
दूल्हे की बुआ बनने के लिए।"

विप्रो एप्लाइंग थॉट इन स्कूल्स के वित्तीय सहयोग से विकसित

वितरण
झनक राम साहू

सहयोग
वरुण ग्रोवर
प्रभात
मिहिर
कमलेश यादव

सदस्यता शुल्क

एक प्रति:	30.00	(व्यक्तिगत)
	50.00	(संस्थागत)
वार्षिक:	300.00	(व्यक्तिगत)
	500.00	(संस्थागत)
तीन साल:	800.00	(व्यक्तिगत)
	1350.00	(संस्थागत)
आजीवन:	4000.00	(व्यक्तिगत)
	6000.00	(संस्थागत)

सभी डाक खर्च हम देंगे। चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चैक से भेज सकते हैं। भोपाल के बाहर के चैक में 80.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल, म.प्र. 462 016
फोन: (0755) 4252927, 2550976, 2671017
फैक्स: (0755) 2551108
e mail - chakmak@eklavya.in
e mail - circulation@eklavya.in
www.chakmak.eklavya.in
www.eklavya.in

अमृता सन्धू, पाँचवीं, डीपीएस, लुधियाना

किताब पढ़ते-पढ़ते एक बार मस्ती में
गिरे नदी में दोनों जा रहे थे कश्ती में

- गुलज़ार

बोलीरंगोली

हफ्सा शफीक खत्री, कमला नेहरू स्कूल, भोपाल

अनुषा भार्गव, छठी, डीएवी, गुड़गाँव

पहले पाँच

आयुषी, नौवीं, डीपीएस, पटना

दोस्तो,

इन दो सुरीली पंक्तियों पर तुम्हारे चित्र मिले। सोचता था कि कश्ती से गिरनेवाले दोनों यानी एक किताब और एक उसे पढ़नेवाला है। तुम्हारे ज़्यादातर चित्रों में दो लोग कश्ती से गिरते दिख रहे हैं। और एक किताब भी।

दीपा का चित्र देखो। दीपा किताब में डूबी हैं। किताब में ही कोई नदी है। नदी में कोई कश्ती है जिसमें बैठे दो लोग गिर पड़े हैं। क्या बात है!

गुलज़ार साब के पसन्दीदा पाँच चित्र पेश हैं।

इन सभी को उपहार में चकमक की एक साल की सदस्यता मिलेगी। आठ चित्र और भी हैं जो बहुत सधे हैं। इन्हें तुम पेज 38 पर देख सकते हो।

अगले अंक के लिए कविता है ..

लम्बी-चौड़ी चौरस गोल
खोल कोई तो खिड़की खोल
बारिश में इसके शीशों पर
बूँदें लिख जाती हैं बोल

- गुलज़ार

हो सकता है बड़े तुम्हें इसके अर्थ बताएँ। उनके अर्थ सुनो-समझो पर चित्र अपने मन का ही बनाओ...। कोशिश करना कि तुम्हारा चित्र हमें 5 अक्टूबर तक मिल जाए। चित्र के साथ अपना पता, कक्षा, फोन नम्बर ज़रूर लिखना। हमारा पता है –

चकमक, एकलव्य,
ई-10, शंकर नगर, शिवाजी नगर,
भोपाल -16 (फोन - 09425010115)

दीपा, आठवीं, शिक्षान्तर, दिल्ली

पीसा की मीनार पर चढ़कर प्रयोग किसने किया था?

सुशील जोशी

पीसा इटली में एक शहर है। यहाँ एक प्राचीन मीनार है जो काफी झुकी हुई है। चित्र में देखोगे तो पता चलेगा कि यह मीनार कितनी झुकी हुई है। तो यह सैलानियों के आकर्षण का केन्द्र है।

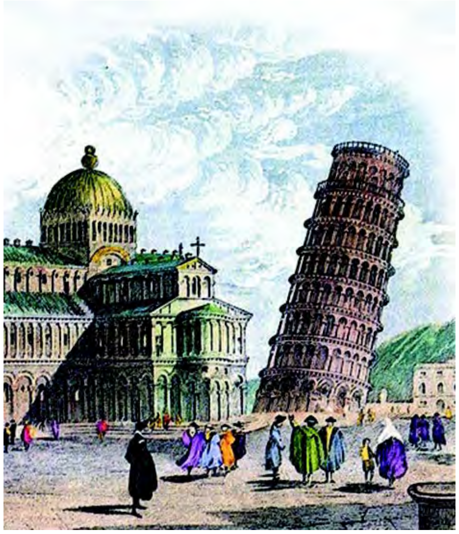

कहते हैं कि इस झुकी हुई मीनार पर एक प्रयोग किया गया था। यह प्रयोग ऐसा था कि इसने विज्ञान का हुलिया बदल दिया था। तुम्हें भी किताबों में कभी इस प्रयोग के बारे में पढ़ने को मिला होगा। यदि नहीं पढ़ा है तो अब पढ़ लो...

बात 1589 की है। कहते हैं कि इटली के मशहूर गणितज्ञ और वैज्ञानिक गैलीलियो गैलीली पीसा की मीनार पर चढ़े। सबसे ऊपरी मंज़िल से उन्होंने तोप के दो गोले एक साथ गिराए। एक गोला भारी था और दूसरा हलका। वहाँ उपस्थित लोगों ने देखा कि दोनों गोले ज़मीन पर एक साथ गिरे। उस समय गैलीलियो मात्र 26 वर्ष के थे और पीसा विश्वविद्यालय में गणित पढ़ाया करते थे।

तो गैलीलियो ने यह प्रयोग करने के बारे में क्यों सोचा? बात ऐसी है कि गैलीलियो से करीब 1500 साल पहले एक महान व्यक्ति हुए थे जिनका नाम अरस्तू है। अरस्तू ने दुनिया की हर चीज़ (चलो लगभग हर चीज़) पर विचार करके सिद्धान्त बनाए थे। इनमें से एक सिद्धान्त यह था कि हर चीज़ का एक कुदरती स्थान होता है। जैसे, भारी चीज़ों का स्थान पृथ्वी पर है, आग का स्थान आकाश में है। इसके आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि हलकी और भारी चीज़ों को गिराया जाएगा तो भारी चीज़ जल्दी गिरेगी, ज़्यादा रफ्तार से गिरेगी क्योंकि उसे अपने कुदरती स्थान तक पहुँचने की जल्दी जो है।

वैसे तुमने भी देखा होगा कि यदि हम एक लकड़ी के टुकड़े और एक कागज़ को बराबर ऊँचाई से गिराएँ तो लकड़ी का टुकड़ा पहले ज़मीन पर पहुँचता है। इसे देखकर तो लगता है कि अरस्तू की बात सही है। मगर गैलीलियो को थोड़ी शंका थी।

तो उन्होंने चीज़ों के गिरने को लेकर प्रयोग करने की ठान ली। पहले के ज़माने में लोग ऐसे सवालों का समाधान करने के लिए प्रयोग का सहारा नहीं लेते थे। वे तर्क के आधार पर सवालों के जवाब खोजा करते थे। कहते हैं कि प्रयोग करके सवालों को सुलझाने की परिपाटी गैलीलियो ने ही शुरू की थी।

खैर, गैलीलियो ने दो तोप के गोले लिए – एक हलका, एक भारी और चढ़ गए पीसा की झुकी हुई मीनार पर। वहाँ से सबके सामने (अच्छी-खासी भीड़ जमा थी) उन्होंने उन दोनों गोलों को एक साथ छोड़ दिया। पलक झपकते ही दोनों गोले ज़मीन से जा टकराए और सबने देखा कि दोनों गोले ज़मीन पर एक साथ गिरे थे।

मतलब दोनों की रफ्तार एक बराबर थी, भारी गोले को ज़मीन पर पहुँचने की कोई जल्दी नहीं थी। तो क्या साबित हुआ? साबित यह हुआ कि सारी वस्तुएँ पृथ्वी की ओर एक ही गति से गिरती हैं और उनके गिरने की गति वज़न पर निर्भर नहीं करती।

सामान्य तमाशबीन को तो दोनों गोले एक साथ ही गिरते दिखे थे मगर खुद गैलीलियो ने पाया था कि भारी गोला थोड़ा पहले गिरता है। तो क्या अरस्तू की बात सही थी? नहीं। गैलीलियो का कहना था कि इस प्रयोग में कई गलतियाँ होने की सम्भावना है। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि दोनों गोलों के गिरने के समय में अन्तर बहुत ही कम है। इसलिए यह कहना ज़्यादा सही है कि वे दोनों एक साथ ही गिरे हैं।

इसके अलावा उन्होंने यह भी अन्दाज़ लगाया कि अभी भी गोले छोटे-बड़े हैं। इसलिए हवा के साथ उनकी रगड़ अलग-अलग होगी। फिर हवा उन्हें ऊपर की ओर धकेलेगी। वह धक्का भी तो अलग-अलग होगा। तो उन्होंने कहा कि यदि इस प्रयोग को ऐसी परिस्थिति में किया जाए, जहाँ हवा न हो, तो दोनों गोले एकदम साथ-साथ गिरेंगे।

कुछ लोगों का कहना है कि शायद गैलीलियो ने यह प्रयोग किया ही नहीं था। खुद गैलीलियो ने जो कुछ लिखा है उसमें कहीं इस प्रयोग का ज़िक्र नहीं मिलता। लोग कहते हैं कि उनके एक शिष्य विंसेंज़ो विविएनी ने बाद में यह कहना शुरू कर दिया था कि गैलीलियो ने पीसा की मीनार पर चढ़कर यह प्रयोग किया था। हो सकता है कि गैलीलियो ने यह कल्पना की होगी कि यदि ऐसा प्रयोग किया जाए तो क्या होगा!

बताते हैं कि 1586 में साइमन स्टेविन नामक एक गणितज्ञ-इंजीनियर ने यह प्रयोग किया था। और तो और, स्टेविन ने यह प्रयोग पीसा की मीनार पर से नहीं बल्कि डेल्फ्ट के एक गिरजाघर की मीनार पर से किया था। तो हो सकता है कि गैलीलियो ने कभी अपने शिष्य से इस प्रयोग का ज़िक्र किया होगा और शिष्य ने बाद में मान लिया कि गैलीलियो ने ही यह प्रयोग किया था।

यहाँ एक पेंच और है। गोले ज़मीन पर कब गिरे यह तो बाद में पता चलेगा मगर खुद गैलीलियो का कहना है कि जब उन्होंने गोलों को छोड़ा तो शुरू में हलकावाला गोला थोड़ा तेज़ी से गिरकर आगे निकल गया था। थोड़ी ही देर में भारी गोला आगे हो गया।

कुछ लोगों ने इस प्रयोग को एक बार फिर दोहराकर देखा है और पाया है कि ठीक ऐसा ही होता है – शुरू में हलकावाला गोला थोड़ा आगे रहता है फिर भारी गोला आगे निकल जाता है।

यदि गैलीलियो सिर्फ यही बताते कि दोनों गोले एक साथ गिरे थे तो हो सकता है यह प्रयोग उनके दिमाग में रहा हो, मगर यह बारीक अवलोकन (कि हलका गोला शुरू में आगे रहता है) साफ कर देता है कि गैलीलियो ने यह प्रयोग ज़रूर किया होगा।

खैर गैलीलियो (या किसी ने भी) ने यह प्रयोग करके अरस्तू के विचारों को झकझोर दिया था और आधुनिक विज्ञान की बुनियाद रख दी थी। चक मक

तोप के दो गोले। एक हलका, एक भारी। पलक झपकते ही दोनों गोले ज़मीन से जा टकराए मतलब भारी गोले को ज़मीन पर पहुँचने की कोई जल्दी नहीं थी।

एक था हाजी एक था नाजी

स्वयं प्रकाश

चौधरी नाजीराम पहली बार अपने दोस्तों के साथ मुम्बई जा रहे थे। रेल महाराष्ट्र से गुज़र रही थी। नाजीरामजी अपने दोस्तों के साथ ताश खेल रहे थे।

तभी एक स्टेशन आया और रेल रुक गई।

नाजीरामजी ने खिड़की से बाहर झाँका लेकिन उन्हें कुछ नज़र नहीं आया। उन्होंने पास बैठे मुसाफिर हाजीराव शिन्दे से पूछा, "कौन-सा स्टेशन आया?"

अब समस्या ये हो गई कि हाजीराव शिन्दे को हिन्दी नहीं आती थी। उन्होंने कहा, "काय म्हणतोस?"

नाजीराम समझे हाजीराव ने स्टेशन का नाम बताया।

वह सन्तुष्ट हो गए और ताश के खेल में रम गए।

कुछ देर बाद जब अगला स्टेशन आया तो नाजीरामजी ने फिर हाजी राव से पूछा, "कौन-सा स्टेशन आया?"

हाजीराव ने कहा, "काय म्हणतोस?"

नाजीरामजी को लगा जैसे आगरा फोर्ट और आगरा कैंट दो स्टेशन हैं वैसे ही काय म्हणतोस भी दो होंगे।

लेकिन जब अगले स्टेशन पर गाड़ी रुकी और नाजीरामजी ने हाजीराव से पूछा, "कौन-सा स्टेशन आया" और उसने फिर कहा "काय म्हणतोस" तो नाजीरामजी ने हाजीराव का कॉलर पकड़ लिया और बोले, "के बोल्यो?"

चकित से हाजीराव ने पूछा, "कशाला मारतोस!"

नाजीरामजी अपने दोस्तों से बोले, "इब बताया टेसन का असली नाम। कबसे बेकूफ बणा रहा था, मैं पूछूँ अगले टेसन का नाम तो यो बतावे पिछले का! जरा-सा रंग दिखाया तो सिद्दा हो गया। कशाला मारतोस है इस टेसन का नाम। समझे भाई लोग!"

(काय म्हणतोस - क्या बोला?, कशाला मारतोस - मार क्यों रहे हो?)

अतनु राय

एक दिन हाजी अपने दोस्त नाजी के घर पहुँचे तो देखा नाजी किसी सोच में डूबे हुए हैं।

हाजी ने पूछा, "किस सोच में डूबे हो?"

नाजी बोले, "बाज़ार में अमरीका की बनी एक मोटरसाइकिल आई है जो किक मारते ही अस्सी की स्पीड पकड़ लेती है। मन कर रहा है ले लूँ। दिमाग कह रहा है जाने दे यार, इस उम्र में ऐसा शौक ठीक नहीं। समझ में नहीं आ रहा क्या करूँ। तुम क्या कहते हो?"

हाजी बोले, "देखो भाई, अगर तुम ये मोटरसाइकिल लेते हो, तो दो बातें हो सकती हैं। एक, तुम इसे चलाना सीख लो और दो, नहीं सीख पाओ! अगर नहीं सीख पाते चलाना, तो कोई बात नहीं, लौंडे को दे देना और अगर चलाना सीख लेते हो, तो दो बातें हो सकती हैं। एक, ठीक-ठाक चलाकर सही-सलामत घर लौट आओ और दो, कहीं ठोक-ठाक दो और अस्पताल में जा पड़ो! अब अगर सही-सलामत लौट आते हो, तब तो कोई बात नहीं, अगले रोज़ फिर मरने की कोशिश करना और अगर घर पहुँचने की बजाय अस्पताल पहुँच जाते हो, तो दो बातें हो सकती हैं। एक, तुम्हारी चोटें मामूली हों – सिर्फ दस-पाँच छोटी-मोटी हड्डियाँ ही टूटी हों और चार-छह महीने घरवालों को हलकान करने के बाद तुम लड़खड़ाते-लटकते घर लौट आओ। और दो, तुम प्रभु को प्यारे ही हो जाओ! अब अगर घर आ गए तब तो कोई बात नहीं लेकिन शहीद हो गए तो दो बातें हो सकती हैं। एक, तुम सीधे स्वर्ग पहुँच जाओ और दो, कमबख्त यमदूत चित्रगुप्त के भड़काने पर तुम्हें नरक में डाल दें! अब अगर तुम स्वर्ग में पहुँच गए तो कोई काम न धाम, कोई भूख न प्यास। बस मौजां ही मौजां और अगर नरक में सीट अलॉट हो गई तो प्यारे वहाँ तुम्हें हमारे जैसे इतने दोस्त मिलेंगे कि सबसे हाथ मिलाते-मिलाते ही थककर चूर हो जाओगे। ज़्यादा कुछ सोचने का मौका ही नहीं मिलेगा।"

"तो.... दादाभाई! आप तो खरीद लो अमरीका की मोटरसाइकिल!" चकमक

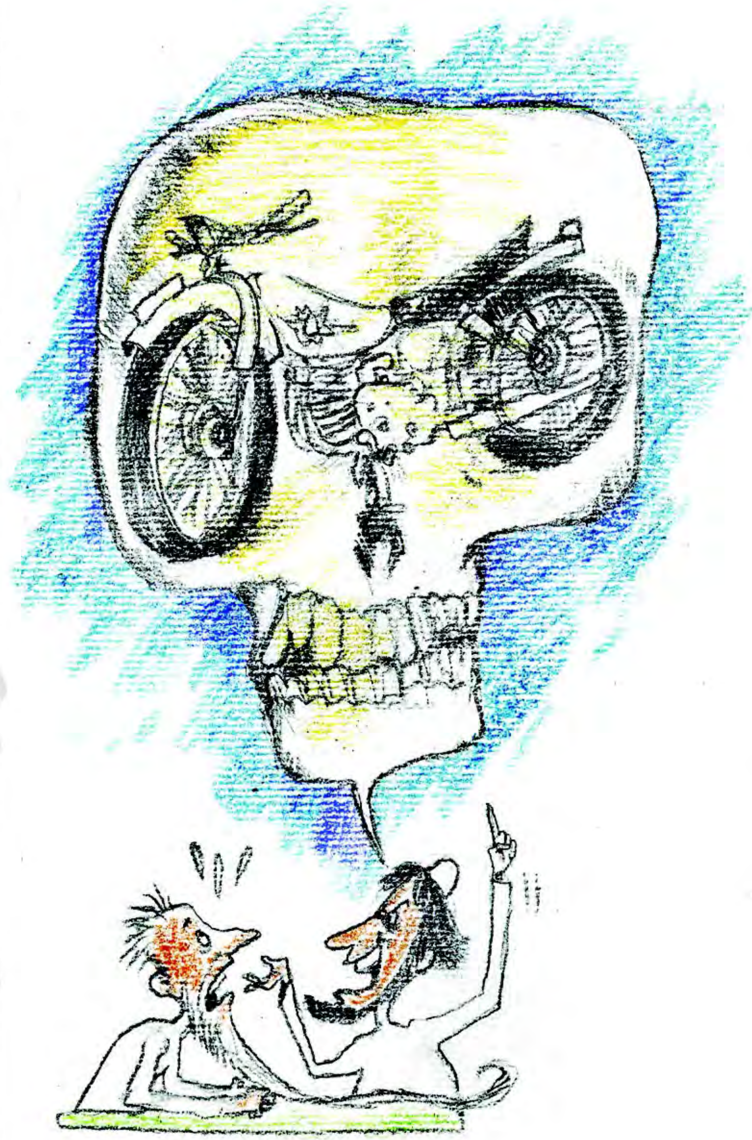

नाजी साहब जितना काम करते थे उससे ज़्यादा उसका शोर मचाते थे। उनका तकियाकलाम था मुझे मरने की भी फुर्सत नहीं है। दिन में हज़ार बार थोड़ी-थोड़ी देर में कहते थे "ओफ! इतना काम है कि मुझे मरने की भी फुर्सत नहीं है।"

एक दिन जब उनका सेक्रेटरी हाजी उनका तकियाकलाम "मरने की भी फुर्सत नहीं है" सुनते-सुनते बुरी तरह पक गया तो बोला, "सर! आपकी इजाज़त हो तो एक बात कहूँ!"

नाजी साहब बोले, "फरमाइए!"

हाजी बोला, "ऐसा है साहब कि दुनिया के काम तो चलते ही रहेंगे। ये तो कभी खत्म नहीं होंगे। मेरी मानें तो आप एक काम करें। किसी दिन पक्का मन बना लें और इस काम के लिए भी फुर्सत निकाल ही लें..." चकमक

एक मुलाकात तितलियों के साथ...

डॉ. किशोर पँवार

कॉमन जेजबेल

ब्लू टाइगर

लाइम बटरफ्लाई

कॉमन गल

छुटपन में हमें तितलियों को छूने-पकड़ने का बड़ा मन करता था। हम पुवाड़ियों की टहनी उखाड़कर तितलियों के पीछे खूब भागते। कोशिश होती कि एक-दो तितलियाँ झपट्टे में आ जाएँ। तितली और पुवाड़ का रिश्ता बड़ा गहरा है। बरसात में जहाँ-जहाँ पुवाड़ियाँ उगती हैं वहाँ-वहाँ पीले रंग की तितलियाँ अपना डेरा डाल लेती हैं।

वैसे बरसातों में तो तरह-तरह की घास-फूस हर जगह – बाग-बगीचों में, खेतों और मेड़ों पर – उग आती हैं। और यहाँ तितलियाँ आसरा पाती हैं। इन्हें हम तितलियों के प्रजनन केन्द्र भी कह सकते हैं। खट्टी-बूटी, वज्रदन्ती, बोर जाली, हाइग्रोफिला आदि जैसे ये पौधे तितलियों को भोजन उपलब्ध कराते हैं। तितलियों के अण्डों से निकले लारवा (इल्ली) इन पत्तों को खाते हैं जो इनका खास भोजन है।

मोरमोन

ग्रास येलो

टेल्ड जे

पायोनीर

ग्रेट एगफ्लाई

प्लेन टाइगर

मोटल्ड इमीग्रांट

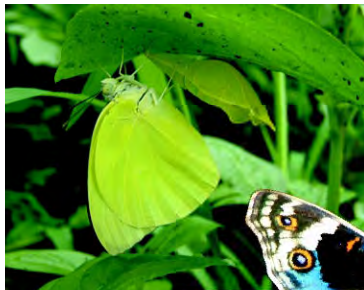

कॉमन इमीग्रांट

ब्लू पेंसी

रेड पायरेट

और इन पौधों पर खिलनेवाले रंग-बिरंगे, मखमली अनोखी छटावाले फूलों की तो बात ही मत पूछो! ये तो तितलियों के दावतखाने हैं। इन पर बैठकर वे मीठे और सुगन्धित मकरन्द और पौष्टिक पराग की दावत उड़ाती हैं।

पर बरसात में इतनी ढेर सारी तितलियाँ अचानक आ कहाँ से जाती हैं? पत्ती कुतरनेवाली इल्लियों का फूलों पर मण्डरानेवाली तितलियों से क्या रिश्ता है? क्यों ये कभी पत्ती पर बैठती हैं तो कभी फूलों पर?

तितलियों का सभी पौधों से एक-सा रिश्ता नहीं होता। कुछ खास रिश्ते हैं इनके पौधों से। यदि ये खास पौधे हमारे पर्यावरण में होंगे तभी कुछ खास तितलियाँ हमारे आसपास नज़र आएँगी। अधिकतर तितलियाँ अपने अण्डे पौधों की पत्तियों पर ही देती हैं। कोई अरण्डी की पत्ती पर तो कोई आम की पत्ती पर। कोई आक की पत्ती खाती है तो कोई खट्टी बूटी की। कुछ इल्लियों को अमलतास की पत्ती अच्छी लगती है तो किसी को नींबू-सन्तरे की। कॉमन क्रो तितली के लारवा को कड़वी कनेर भाती है तो पत्तागोभी तितली को पत्तागोभी की पत्तियाँ।

जिन पत्तियों पर तितलियाँ अपने अण्डे देती हैं उन्हें उस तितली का लारवल फूड प्लांट कहा जाता है। हालाँकि कुछ तितलियाँ कई तरह के फूलों का रसपान करती हैं।

लैंटाना (कुरी) और गेंदे पर आठ-दस तरह की तितलियों को मैंने एक साथ रस पीते देखा है। यह देखना भी मज़ेदार होगा कि क्या लैंटाना और गेंदे पर कोई लारवा मिलता है या नहीं?

लैंटाना, गेंदा, काक्स कॉम्ब, ट्रायडेक्स जैसे फूल तितलियों को शायद खास पसन्द हैं। इनके गुलाब तो ये ही हैं! हाँ, गुलाब की बात चली है तो बताना गुलाब पर तुम्हें कौन-कौन-सी तितलियाँ बैठी नज़र आई हैं!

अपने आसपास की तितलियों को उनके नाम से पहचानने के लिए यहाँ उनके फोटो दिए जा रहे हैं। ये तितलियाँ तुम्हें बगीचों में, घरों के आसपास, जंगलों व खेतों के इर्द-गिर्द दिखाई दे सकती हैं। कौन-सी तितली किस मौसम में कहाँ दिखी? किस फूल का रस चूस रही थी? यह सब तुम्हें नोट करना है। इस तरह तुम्हारे पास एक तितली चार्ट बन जाएगा।

बेन्डेड ऑल

यलो पेंसी

राइस स्विफ्ट

पीकॉक पेंसी

चॉकलेट पेन्सी

कॉमन केस्टर

कैसे पहचानें?

तितलियों की पहचान उनके पंखों के रंग और उन पर बनी चित्रकारी से होती है। जैसे कॉमन क्रो काले कव्वे के रंग की तितली है जिस के किनारों पर सफेद बिन्दी की दो कतारें हैं। प्लेन टाइगर, टाइगर के रंग की धारी युक्त पंखोंवाली तितली है तथा ब्लू टाइगर का रंग हलका नीला धारीदार होता है।

पेंसी तितलियों की खास पहचान उनका रंग और पंखों पर बनी आँखें (Eyespots) हैं। हालाँकि चॉकलेट पेंसी और यलो पेंसी पर स्पष्ट आँखें नहीं होतीं। पीकॉक पेंसी और ब्लू पेंसी की आँखों को देखकर लगता है कि ये तीन-चार जोड़ी छोटी-बड़ी आँखों से हमें घूर रही हैं।

क्रिमसन टिप, व्हाइट ऑरेंज टिप और यलो ऑरेंज टिप के तो नाम से ही स्पष्ट है कि इनके आगे के पंखों के किनारे किस रंग के हैं। यलो ऑरेंज टिप जब अपने पंख खोलती है तो उसका सुन्दर रूप दिखाई देता है। ऐसा लगभग हर तितली के साथ होता है। पंख समेटते ही रंगों का जादू गायब हो जाता है और पता ही नहीं चलता कि यह तितली उड़कर कहाँ बैठी है।

पेल ग्रास ब्लू

कॉमन पायरेट

मोरमोन रोमुलस

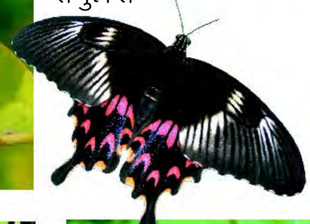

बेरोनेट

लेमन पेन्सी

कॉमन लेपर्ड

इवनिंग ब्राउन

ग्रास ब्लू

व्हाइट ऑरेंज टिप

स्मॉल ऑरेंज टिप

तितली का जीवन चक्र

हर जीव की तरह तितलियों का भी जीवन चक्र होता है। तितलियाँ तरह-तरह की पत्तियों पर अपने अण्डे देती हैं।

अण्डे फूटने पर उनसे लार्वा (इल्ली) निकलता है। जो पत्ती कुतर-कुतर कर बढ़ता जाता है। लारवा की तीन-चार अवस्थाएँ होती हैं। जिन्हें इन्सटार कहते हैं। इस तरह प्रथम इन्सटार, द्वितीय और तृतीय इन्सटार लार्वा की अवस्थाएँ होती हैं।

लार्वा के बाद प्यूपा अवस्था होती है। इसमें इल्ली एक वयस्क पंखदार तितली बन जाती है। 10-15 दिनों बाद जब प्यूपा फटता है तब उसमें से एक सुन्दर रंग-बिरंगी तितली निकलती है। यह फूलों का रस चूसती है। वयस्क नर व मादा तितलियाँ आपस में प्रजनन करते हैं। मादा तितलियाँ फिर से पत्तियों पर अण्डे देती हैं। उम्र पूरी होने पर मर जाती है या फिर मकड़ी, छिपकली, मेंढक या चिड़ियों जैसे किसी जीव का शिकार बन जाती हैं। इस तरह तितली का जीवन चक्र चलता रहता है।

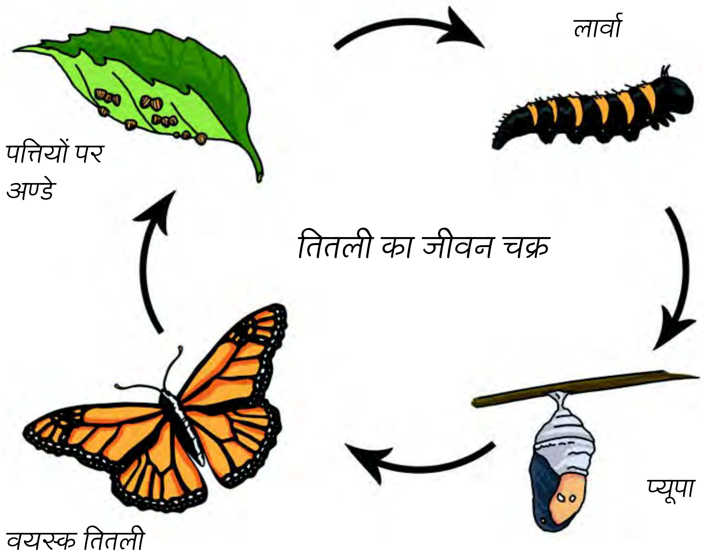

कहाँ मिलेंगे अण्डे और प्यूपा?

तितलियाँ अपने अण्डे पत्तियों पर देती हैं। पर कहाँ? ऊपर, नीचे, पुरानी पत्तियों पर या नई पत्तियों पर? अकेले या समूह में? यह सब तुम्हें पता लगाना है। तितलियों को देखते रहो। जिस पत्ती पर वे बार-बार बैठती हैं उसे उलट-पलटकर देखो। हो सकता है तुम्हें तितली का अण्डा दिख जाए!

किस तितली के अण्डे कैसे व किस रंग के हैं यह भी तुब पता लगा सकते हो । तुम्हारे अनुभवों का हमें इन्तज़ार रहेगा।

सभी फोटोः किशोर पँवार

पाम बाब

स्लेटी फ्लेश

कॉमन क्रो

क्रिमसन टिप

यैलो ऑरेंज टिप

एग्ग फ्लाई (मादा)

बिना नाम की नदी

केदारनाथ सिंह

मेरे गाँव को चीरती हुई
पहले आदमी से बहुत पहले से
चुपचाप बह रही है वह पतली-सी नदी
जिसका कोई नाम नहीं
तुमने कभी देखा है
कैसी लगती है बिना नाम की नदी?
कीचड़, सिवार और जलकुम्भियों से भरी
वह इसी तरह बह रही है कई सौ सालों से
एक नाम की तलाश में
सारे गाँव की नदी।

सूरज निकलने के काफी देर बाद
आती हैं भैंसें
नदी में नहाने के लिए
नदी कहीं गहरे में हिलती है पहली बार
फिर आते हैं झुम्मन मियाँ
हाथ में लिए बंसी और चारा
नदी में पहली बार एक चमक आती है।
जैसे नदी पहचान रही हो झुम्मन मियाँ को
दिन भर कितनी मछलियाँ
फँसती है उनकी बंसी में?
कितने झींगे, कितने सिवार
पानी से कूदकर आ जाते हैं
उनके थैले के अन्दर
कोई नहीं जानता

नदी को कौन देता है नाम
तुमने कभी सोचा है?
क्या सुबह से शाम
नदी के किनारे
नदी के लिए नाम की तलाश में
एकटक बैठे रहते हैं झुम्मन मियाँ?

चित्रः अतनु राय

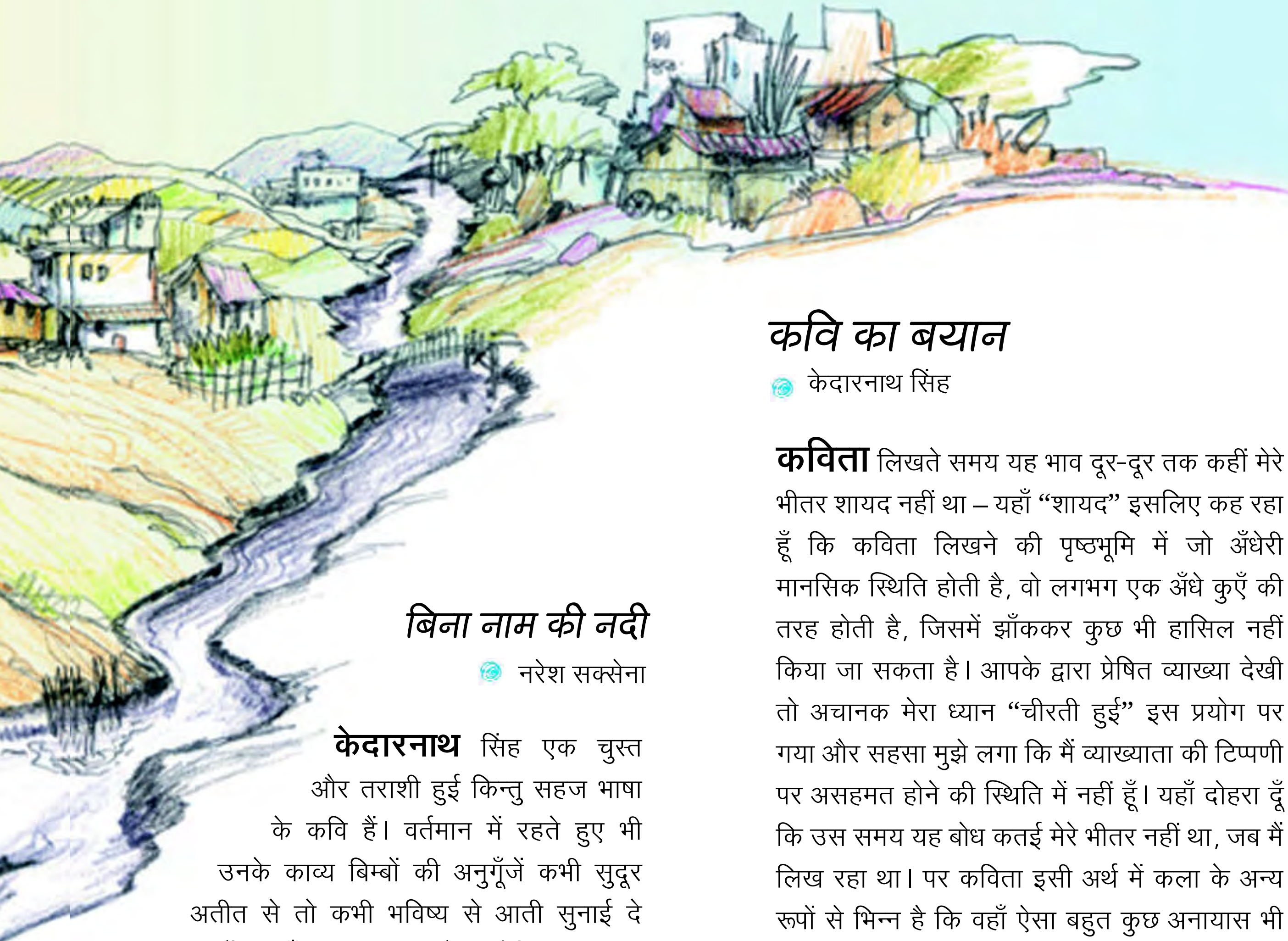

बिना नाम की नदी

नरेश सक्सेना

केदारनाथ सिंह एक चुस्त और तराशी हुई किन्तु सहज भाषा के कवि हैं। वर्तमान में रहते हुए भी उनके काव्य बिम्बों की अनुगूँजें कभी सुदूर अतीत से तो कभी भविष्य से आती सुनाई दे सकती हैं। यहाँ एक उदास और उपेक्षित नदी का बिम्ब है जो कीचड़, सिवार और जलकुम्भी से भरी है। इसका कोई नाम भी नहीं है। नदी अनाम क्यों है?

हम तो जिन्हें प्यार करते हैं भले ही वो गाय हो या सुग्गा या कुत्ता उन्हें नामों से पुकारते हैं। जैसे श्यामा, मोती या मिटठू। ज़ाहिर है इस नदी को कोई प्यार करने वाला नहीं है। इस नदी के पास न घाट हैं न नावें न पौराणिक पुण्य-प्रताप की कथाएँ। बच्चों के नाम उन्हें उनके पूर्वज देते हैं किन्तु नदियों-पहाड़ों को जो हमारे पूर्वज हैं उन्हें नाम उनके बच्चे यानी हम या हमारी रची कथाएँ देती हैं।

ये नदी पहली बार तब हिलती है जब भैंसें इसके पास आती हैं। हमें पता है भैंसों को कीचड़, पानी में बैठना बहुत प्रिय होता है। नदी को भैंसों का आना अच्छा लगता है। और नदी में पहली बार चमक तब आती है जब झुम्मन मियाँ उसके पास आते हैं। नदी जैसे उन्हें पहचान लेती है।

(शेष भाग पेज 23 पर)

कवि का बयान

केदारनाथ सिंह

कविता लिखते समय यह भाव दूर-दूर तक कहीं मेरे भीतर शायद नहीं था – यहाँ "शायद" इसलिए कह रहा हूँ कि कविता लिखने की पृष्ठभूमि में जो अँधेरी मानसिक स्थिति होती है, वो लगभग एक अँधे कुएँ की तरह होती है, जिसमें झाँककर कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता है। आपके द्वारा प्रेषित व्याख्या देखी तो अचानक मेरा ध्यान "चीरती हुई" इस प्रयोग पर गया और सहसा मुझे लगा कि मैं व्याख्याता की टिप्पणी पर असहमत होने की स्थिति में नहीं हूँ। यहाँ दोहरा दूँ कि उस समय यह बोध कतई मेरे भीतर नहीं था, जब मैं लिख रहा था। पर कविता इसी अर्थ में कला के अन्य रूपों से भिन्न है कि वहाँ ऐसा बहुत कुछ अनायास भी व्यक्त या रूपायित हो जाता है, जो चेतन मन की सतह पर शायद उस समय कहीं नहीं होता। इस कविता के चरित-नायक झुम्मन मियाँ (दरअसल जुम्मन शब्द ही गाँव की बोलचाल में झुम्मन बन गया है और ऐसे ध्वनि-परिवर्तन सहज सांस्कृतिक रूपान्तरण में दिलचस्प सच्चाइयों की ओर संकेत करते हैं) कोई कल्पना नहीं है। मेरी अन्य कविताओं में आए अनेक नामों की तरह उन्हें मेरे जनपद की स्मृतियों में आज भी खोजा जा सकता है।

मैं कविता पर कोई टिप्पणी नहीं करने जा रहा हूँ। शायद इसकी ज़रूरत भी नहीं है, पर इतना जोड़ दूँ कि वह नदी अब नदी भी नहीं रह गई है, जिसके किनारे वह पूरा काव्यलोक मेरे लिए घटित हुआ। झुम्मन मियाँ का परिवार अब भी है और वह नदी अब एक गन्दे नाले में बदल गई है – हमारी सदियों पुरानी साझी संस्कृति की सच्चाई की तरह।

मैं पढ़ना चाहूँ

मैं पढ़ना चाहूँ
पर मेरी मम्मी मुझको रोक पड़ीं
कैसे ये बतलाऊँ कि
मैं सिसक-सिसक के रो पड़ी
जब पापा ने रोता देखा
तो मम्मी से उनकी बहस छिड़ी
मैं पढ़ना चाहूँ
पर मेरी मम्मी मुझको रोक पड़ीं
जाने कैसे मम्मी को आई अक्ल
जल्दी-से बस कह पड़ीं
कल से जाएगी बिटिया स्कूल
फिर ना सबसे यह बात कही
मैं पढ़ना चाहूँ
पर मेरी मम्मी मुझको रोक पड़ीं

–शबाना, दिगन्तर जयपुर, राजस्थान

मेरा घर बरसते मौसम में है

एक भालू था। वो गर्मी के मौसम में पानी में तैरने के लिए जा रहा था। उसे बड़ी-सी मछली दिखी। भालू उसे पकड़कर खा गया। फिर वो घर जाकर सो गया।

सुबह हो गई। उसे ज़ोर की प्यास लगी। उसे जामुन के पेड़ पर तोता दिखाई दिया। पर वह दूर जाने लगा वहाँ जहाँ नदी है बड़ी। उसे चलते-चलते और प्यास लगी ज़ोर की। फिर उसे नदी दिखाई दी। उसमें बहुत सारा पानी था। उसने जाकर पानी पी लिया। मछली भी खा ली। उसे वहाँ पर एक घर दिखाई दिया। वह उसमें घुस गया।

दूसरे दिन बाहर निकला। निकलकर चलने लगा। चलते-चलते थक गया तो उसे जंगल का शेर दिखा। शेर बोला, "कहाँ जा रहे हो?" "तुम्हारा घर कहाँ है?"

"मेरा घर बरसते मौसम में है", भालू ने कहा और चलता रहा।

–चाहत, 5 वर्ष, सवाई माधोपुर, राजस्थान

– नेहा भट्ट, मुस्कान संस्था, भोपाल, म. प्र.

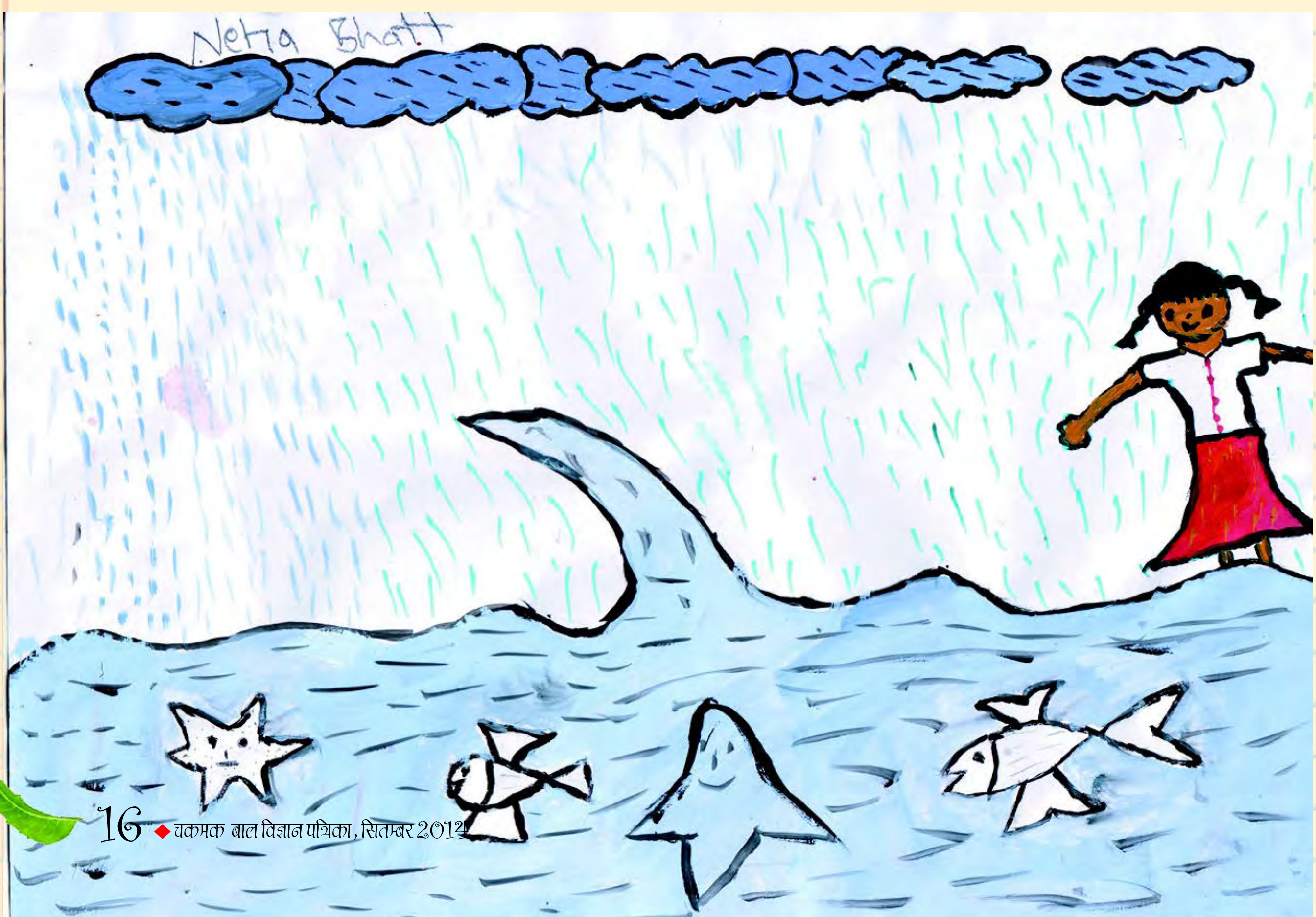

मेरा पन्ना

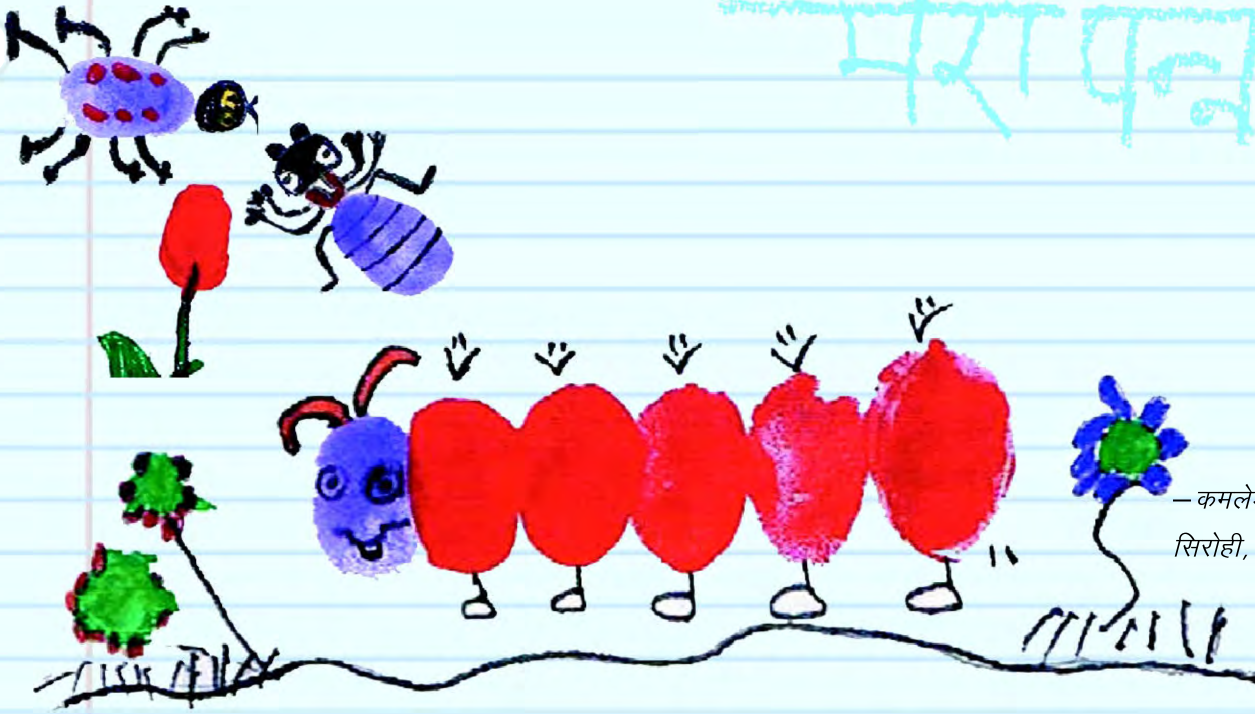

–कमलेश कुमार, सिरोही, राजस्थान

–आशीर्वाद मोहन चमोली, तीसरी, ढुंटोवाला, देहरादून, उत्तराखण्ड

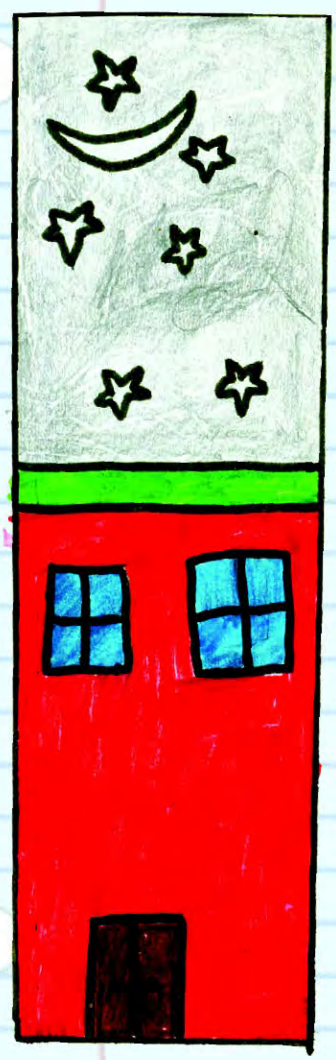

खरगोश और इल्ली

एक दिन खरगोश गाजर खाने गया। उस गाजर में एक इल्ली बैठी थी। खरगोश ने गाजर खा लिया। इल्ली बोली, "खरगोश भैया, खरगोश भैया।" खरगोश चारों तरफ घूमने लगा। खरगोश को चक्कर आ गया। खरगोश गिर गया। इल्ली बोली, "खरगोश भैया, गोल मत घूमो। मुझे भी चक्कर आ रहा है।" खरगोश बोला, "कौन है, सामने आओ। मैं तुझे कच्चा खा जाऊँगा।" इल्ली बोली, "खरगोश भैया आप तो मुझे पहले से ही कच्चा खा चुके हो।"

–आरज़ू बारसे, पहली, अज़ीमप्रेमजी स्कूल धमतरी, छत्तीसगढ़

हाथी और शेर

एक हाथी था। एक दिन वह शेर से मिला और दोनों दोस्त बन गए। एक दिन शेर से मिलने हाथी नहीं आया। शेर ने सोचा कि हाथी घर पर नहीं है। वह उसके घर गया तो देखा वह तो घर पर ही था।

हाथी अपनी दादी की मदद कर रहा था। शेर ने हाथी से पूछा कि तुम अपनी दादी की मदद क्यों कर रहे हो हाथी बोला, "मेरी दादी बीमार है।"

शेर हाथी से मिलकर बहुत खुश था।

–जाह्नवी भट्ट, पहली, बैंगलौर, कर्नाटक

मेरा पन्ना

सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी

मुझे एक मुर्गी मिली जो सोने का अण्डा देती थी। वह प्रतिदिन एक सोने का अण्डा मुझे देती थी। मैं उन अण्डों को बेच देता और पैसे कमाता। मेरे इतने पैसे हो गए कि मैं जो चीज़ खरीदना चाहता था उसे खरीद सकता था। मैंने इतनी चीज़ें खरीद ली कि मेरे घर में नहीं बन पा रही थीं। तो मैंने उन्हें गरीबों में बाँटना शुरू कर दिया। एक दिन मुझे एक हवाईजहाज़ दिखा। मैंने सोचा कि मैं उसको खरीद लूँ। मैंने उस आदमी से पूछा, “आपका हवाईजहाज़ बिकाऊ है?” तो उन्होंने कहा, “हाँ।” मैंने उस हवाईजहाज़ के रुपए पूछे तो उन्होंने कहा 1,20,000 है। मैंने खरीद लिया और उस हवाईजहाज़ में सारे गाँववालों को बैठाकर सफर कराया। तो सारे गाँववालों ने मुझे धन्यवाद दिया। मैं उस हवाईजहाज़ में बहुत घूमा और पूरे गाँव को भी घुमाया-फिराया। मुझे मिसाइल दिखी। मैंने मिसाइल के रुपए पूछे। उसने 100000000 रुपए की बताई। मैंने मिसाइल भी खरीद ली। मिसाइल में बहुत सारे कैमरे लगे थे और मिसाइल इतनी लम्बी थी कि मैं उसे पूरी तरह नहीं देख पाया। तो मैंने हवाईजहाज़ से उसे पूरी तरह देखा। और मैंने मिसाइल में आग लगा दी। तो मिसाइल इतनी हाई गई कि मैंने सोचा मैं मिसाइल का पीछा करूँ। पर मैं उसका पीछा नहीं कर पाया।

–अजय सिंह गुर्जर, छठी, मुस्कान संस्था, भोपाल, म. प्र.

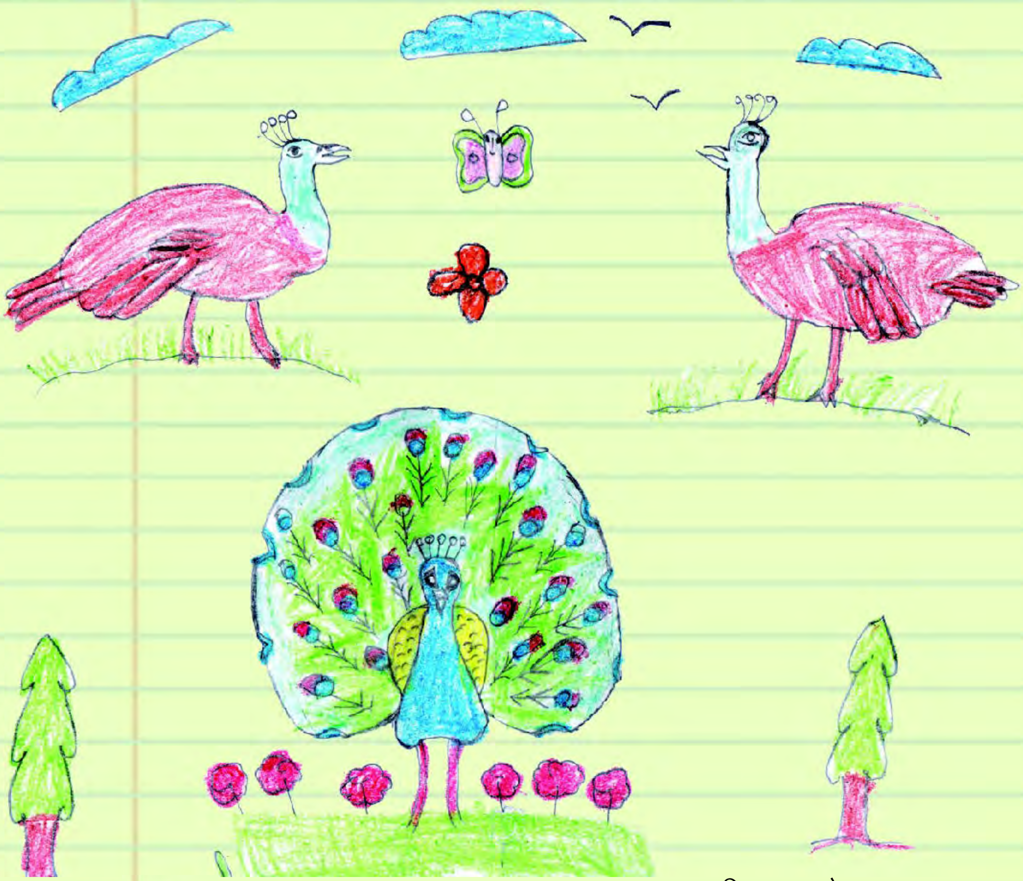

–प्रणव, हिमाचल प्रदेश

मौसम

नीले-नीले आसमान में
पानी है काले-काले बादल में
बादल है या कोई छाया है
यह तो ईश्वर की माया है
पानी कब ये बरसेगा
इंसान कब तक तरसेगा
जब भी ये पानी बरसेगा
धरती को पहले सींचेगा
हम खूब नहाएँगे पानी में
कागज़ की नाव तैराएँगे नाली में
पानी में झम-झम कूदेंगे
सबके संग में हम भीगेंगे
पानी पाकर धरती में होगी हरियाली
घर-घर में छाएगी फिर खुशहाली

–नितीश कुमार, तीसरी,
अपना घर, कानपुर, उ. प्र.

कक्षा 8 से 10 के विद्यार्थियों के लिए

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता

विषय : मलेरिया – एक चुनौती एवं निवारण के उपाय

राष्ट्रीय स्तर पर 25 सर्वश्रेष्ठ निबंध प्रविष्टियों को टैब्लेट कम्प्यूटर, ट्रॉफी एवं प्रमाण पत्र से सम्मानित किया जाएगा, साथ ही लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाएँ 'ड्रीम 2047' एवं 'विज्ञान प्रगति' एक वर्ष तक निःशुल्क भेजी जाएँगी।

अन्तिम तिथि
31 अक्टूबर 2014

विज्ञान प्रसार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार और सी.एस.आई.आर.–ओपन सोर्स ड्रग डिस्कवरी (ओ.एस.डी.डी.) के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। प्रतियोगिता के लिये प्रविष्टि प्रपत्र और नियम व शर्तें विज्ञान प्रसार या ओ.एस.डी.डी. की वेबसाइट से डाउनलोड की जा सकती हैं :

www.vigyanprasar.gov.in / www.osdd.net

विज्ञान प्रसार
ए–50, इंस्टीट्यूशनल एरिया,
सेक्टर–62, नोएडा–201309

सी.एस.आई.आर.–ओ.एस.डी.डी.
अनुसंधान भवन, 2 रफी मार्ग, नई दिल्ली – 110001

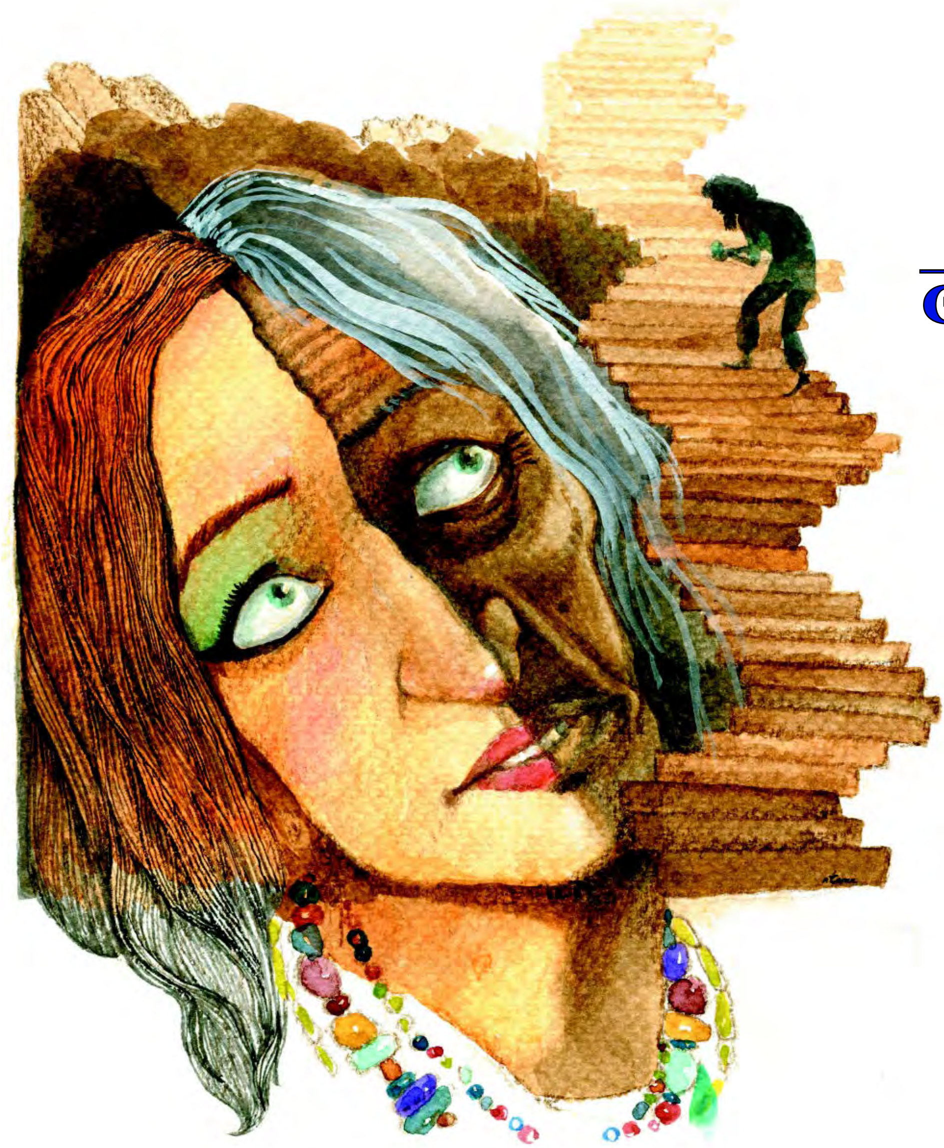

इ स्टो नी क हा नी

नीला पत्थर

डोरिस कारेवा

अँग्रेज़ी से अनुवादः रुस्तम सिंह

पत्थर की दीवार में एक छोटा-सा दरवाज़ा था जो उस वक्त खुला जब यात्री उसके पास से गुज़र रहा था – जिज्ञासावश उसने भीतर झाँकने का फैसला किया। अन्दर तहखाने में उतरती हुई सीढ़ियाँ थीं जिनकी ढलान इतनी खड़ी थी कि उसका सिर छत से लगते-लगते बचा। तहखाने में बहुत ही मद्धिम रोशनी थी। जैसे ही उसकी आँखें मद्धिम रोशनी की अभ्यस्त हुईं, उसे लगा मानो वह अलादीन की गुफा में आ पहुँचा हो – वहाँ इतनी सारी रहस्यमयी और सुन्दर चीज़ें थीं कि उसका सिर चकराने लगा। दीवारों पर तथा छत से लटकते हुए अलग-अलग आकृतियों और आकारों के ढोल थे; घण्टियाँ और सीटियाँ थीं; पवन-घण्टियाँ थीं जो हौले-हौले हिलती हुईं मन्द आवाज़ में टनटना रही थीं; कोने में एक अजीबो-गरीब अगरबत्ती थी जो बहुत ही उम्दा खुशबू फैला रही थी।

पीपों, डिब्बों और टोकरियों में कंगन तथा कानों की बालियाँ, ताबीज़, गले की लटकनें और पदक थे जिन पर जादुई निशान थे। टैरो कार्ड तथा प्राचीन वर्णमालाओं के अक्षरोंवाले पत्थर थे। मेज़ पर एक बड़ी-सी स्फटिक गेंद थी और अजीब बात यह थी कि यह पूरी जादुई दुनिया उसमें झलक रही थी। घने नमूनों वाले कमरबन्द तथा महीन गुलकारियाँ, प्राचीन चर्मपत्रों की गोल-गोल गड्डियाँ तथा पत्थर की पट्टियों पर खुदे हुए रहस्यमयी चिन्ह – यात्री इन सब के सम्मोहन में बँध गया। उसे लगा मानो मद्धिम रोशनीवाले इस छोटे-से कमरे में दुनिया का सारा ज्ञान भरा हुआ था। लेकिन जिस चीज़ ने उसे सबसे ज़्यादा आकर्षित किया वह सबसे ऊपर वाले शेल्फ पर थी, काउंटर पर बैठी लड़की के पीछे; यह एक झिलमिलाता हुआ नीला पत्थर था जिसमें से एक ऐसी रोशनी फूट रही थी जो किसी और ही दुनिया की थी। "क्या मैं उसे देख सकता हूँ?" उसने पूछा। और अब वह यह देखकर चकित रह गया कि दुकानदार का चेहरा एक तरफ से तो एक सुन्दर युवा लड़की का था, पर जब वह दूसरी तरफ मुड़ी तो जो चेहरा नज़र आया वह एक बूढ़ी औरत का था।

“अच्छा पत्थर, सुन्दर पत्थर। तुम्हें बुद्धिमान बनाता है,” काउंटर पर पत्थर को रखते हुए दो चेहरों वाली दुकानदार ने कहा। यात्री ने उसे अपने हाथ में उठाया और उसके वज़न से हैरान हुआ। ऐसा लगा मानो मुट्ठी के आकार का पत्थर का वह टुकड़ा पूरे नक्षत्र को अपने-आप में समोए हुए था। उसके भीतर बहुत गहरे एक मद्धिम नीली लौ जल रही थी जिसमें से बल खाती हुई रोशनी निकल रही थी, मानो वह ज़िन्दा हो।

“मैं इसे खरीद लेता हूँ,” यात्री ने फैसला किया। उसे अचानक लगा कि पत्थर को वापिस रख देने की हिम्मत उसमें नहीं थी। “इसकी क्या कीमत है?” लड़की ने बुढ़िया वाला अपना चेहरा उसकी तरफ मोड़ा और हवा में एक संख्या लिखी जो यात्री के अन्दाज़े से कई गुना ज़्यादा थी। “मेरे पास इतना पैसा नहीं है,” उदास होकर उसने कहा। पत्थर की कीमत जानकर वह लड़खड़ा गया था। लड़की ने उसे अपनी जेबें खाली करने का इशारा किया। बिना कुछ कहे उसने सब कुछ निकालकर काउंटर पर रख दिया। उसके पर्स में जो पैसा था वह पत्थर की कीमत का दसवाँ हिस्सा भी नहीं था – बस उसके दादा की जेब-घड़ी जो उसने यादगार के तौर पर रखी हुई थी और चमड़े की जिल्दवाली एक फटीचर-सी डायरी जिसमें दुनिया का एक नक्शा था और खाली पन्ने जहाँ वह अपने सपने तथा दिवास्वप्न लिख सकता था। और कुछ नहीं। बुढ़िया ने इन चीज़ों को हिसाबी आँखों से देखा; फिर उसने यात्री पर नज़र दौड़ाई। उसने अपने कन्धे उचकाए, दराज़ को खोला, यात्री की पूँजी को बुहारते हुए उसमें सरकाया और उसे पत्थर दे दिया।

यात्री आभार में झुका, फिर मुड़ा और असमंजस में पड़ा सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। परन्तु अब सीढ़ियाँ उससे कहीं ज़्यादा थीं जब वह नीचे उतरा था और पत्थर बहुत भारी था। आखिरकार जब वह बाहर धूप में निकला तो उसकी आकस्मिक रोशनी में आँखें मिचमिचाने लगा। फिर उसने माथा पोंछा और आराम करने बैठ गया।

लेकिन सूरज की रोशनी में पत्थर बिलकुल फीका लग रहा था। यात्री उसे अपने हाथों में कभी इस तरफ मोड़ता, कभी उस तरफ। उसमें न तो कोई झिलमिलाहट थी न कोई रहस्य। यात्री का दिल डूबने लगा। वह उस अगरबत्ती को दोष देने लगा जिसकी जादुई खुशबू में उसका दिमाग फिर गया था और वह अब तक का अपना पूरा जीवन पत्थर के एक बेकार लोंदे के लिए त्याग देने को तैयार हो गया था। “मेरी घड़ी! मेरे दादा की चाँदी की जेब-घड़ी, मेरे अतीत की एक मात्र यादगार!” अफसोस मनाते हुए उसने सोचा। “अब मैं समय के गुज़रने को कैसे मापूँगा? और अपने नक्शे के बिना मुझे कैसे पता चलेगा कि मैं कहाँ हूँ और कहाँ जा रहा हूँ? अब तो मेरे पास मेरे सपने भी नहीं बचे जो अपने गुप्त संकेतों से मुझे रास्ता दिखाते थे – या मेरे दिवास्वप्न जो दिशा तय करते थे!” यात्री ने अचानक अपने माथे पर हाथ मारा। “और मैं दुनिया में अपना काम कैसे चलाऊँगा जबकि मेरे नाम पर एक पैसा भी नहीं है?” उसने निराश होकर सोचा। “उस चुड़ैल ने मुझे धोखा दिया, अपनी कुत्सित चालों से उसने मेरा दिमाग चकरा दिया। मुझे इस बेकार पत्थर की भला क्या ज़रूरत है? यह इतना भारी है कि इसे इधर-उधर ले जाना भी कठिन होगा।”

यात्री को महसूस हुआ कि उसे और किसी भी चीज़ के लिए इतनी आकांक्षा नहीं हुई थी जितनी उस भावना के लिए जो उसने उस वक्त अनुभव की जब वह नीले पत्थर को अपने हाथ में पकड़े हुए था और उसकी झिलमिलाती रोशनी को देख रहा था।

कुछ देर आराम करने के बाद, यात्री ने अपने दुःसाहस के लिए अपने-आप को कोसा और जिधर से आया था उधर वापिस मुड़ गया। अब सीढ़ियाँ पहले से भी ज़्यादा खड़ी थीं और पहले से भी ज़्यादा गहराई में उतर रही थीं, इसलिए उसे साँस लेने के लिए बार-बार रुकना पड़ा। अन्ततः जब वह दहलीज़ तक पहुँचा तो लड़की उसे पहचानकर मुस्कराई और यात्री को मानना पड़ा कि उसकी सुन्दरता चकित कर देने वाली थी। पर इस बार उसे दृढ़ता से पेश आना था। "मैंने अपना विचार बदल लिया है," उसने कहा और अपने गले को साफ किया ताकि वह ज़्यादा दमदार जान पड़े। "मुझे इस पत्थर की ज़रूरत नहीं। मैं चाहता हूँ कि मेरी चीज़ें वापिस कर दी जाएँ।" लड़की ने अपना सिर हिलाया और अपना बुढ़िया वाला चेहरा उसकी ओर मोड़ा। "अच्छा पत्थर, सुन्दर पत्थर," शब्दों पर ज़ोर देते हुए उसने दोहराया। "यह आपको बुद्धिमान बनाता है।" पर यात्री अड़ा रहा। "मुझे अपनी चीज़ें वापिस चाहिए," उसने दोहराया और पत्थर को काउंटर पर रख दिया। बुढ़िया ने अपने कन्धे उचकाए, दराज़ को खोला, सोने के मुट्ठी-भर सिक्के वापिस उसके पर्स में उँड़ेले, और चाँदी की जेब-घड़ी और फटीचर डायरी को उसके पास रख दिया। फिर उसने पत्थर को सबसे ऊँचे शेल्फ पर रखा और पीठ मोड़ ली।

यात्री ने राहत की साँस ली, अपनी सम्पत्ति को वापिस जेब में डाला और एक बार फिर सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। पर सीढ़ियों की संख्या बढ़ गई लगती थी क्योंकि यात्री को कई बार रुकना पड़ा। उसे साँस लेने में कठिनाई हो रही थी, और ऐसा लग रहा था कि सीढ़ियाँ कभी खत्म नहीं होंगी। आखिरकार धूप में पहुँचने पर यात्री तेज़ी से सबसे पास वाले पेड़ के नीचे ढहकर लेट गया ताकि अपनी दुखती माँसपेशियों को आराम दे सके। "कितनी विचित्र दुकान थी, विश्वास नहीं होता," उसने सोचा, मानो यह हाल ही का कोई सपना हो। हालाँकि वह आधी दुनिया घूम चुका था, उसने ऐसी कोई जगह पहले नहीं देखी थी। एक बार फिर उसने भूमिगत खज़ानों के बारे में सोचा, जादुई संकेतों और शून्यों के बारे में, उन शिलालेखों के बारे में जिन पर वह गुप्त ज्ञान अंकित था जिसकी वह केवल धुँधली-सी कल्पना कर सकता था। उस जगह से किसी ऐसी चीज़ की खुशबू आ रही थी जिसकी आकांक्षा वह उम्र भर करता रहा था बिना जाने कि वह क्या थी – हाँ, वह खुशबू एक ऐसे संसार में से पैदा हो रही थी जो स्मृति से भी परे था। अचानक और चौंका देने वाली स्पष्टता से यात्री को महसूस हुआ कि उसे और किसी भी चीज़ के लिए इतनी आकांक्षा नहीं हुई थी जितनी उस भावना के लिए जो उसने उस वक्त अनुभव की जब वह नीले पत्थर को

चित्रः अतनु राय

... तो सुन्दर लड़की ने अपना बुढ़िया वाला चेहरा उसकी और मोड़ा और दोहराया। "अच्छा पत्थर, सुन्दर पत्थर"

अपने हाथ में पकड़े हुए था और उसकी झिलमिलाती रोशनी को देख रहा था। यह वही आकांक्षा थी जिसने उसे घर छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया था; इसी भावना की तलाश में वह आधी दुनिया घूम आया था।

"यह मैंने क्या कर डाला!" व्यथा में यात्री चिल्लाया।

"जीवन ने मेरे लिए एक रास्ता खोला, वह मुझे एक ऐसे खज़ाने तक ले आया जो अब तक खोजा नहीं गया – यहाँ तक कि मैंने उसे अपने हाथों में पकड़कर देखा! और फिर, अचानक, मुझे अपनी पिद्दी-सी सम्पत्ति की याद सताने लगी, दुनिया की वस्तुएँ जो हवा के साथ आती हैं और चली जाती हैं। कितना मूर्ख था मैं!"

खीज में यात्री उठ खड़ा हुआ और उसने अपने दुखते अंगों को फैलाया। एक बात साफ थी – सूरज ढलने से पहले उसे दुकान पर वापिस जाना था। नीले पत्थर के बिना वह ज़िन्दा नहीं रह सकता था। उस पत्थर ने उसमें एक असाधारण भावना जागृत कर दी थी – मानो उसकी पूरी देह एक झिलमिलाहट में बदल गई हो, मानो उसकी आँखें क्षितिज से भी आगे देख सकती हों और उसके कान ब्रह्माण्ड की मरमराहट की मद्धिम से मुद्धिम आवाज़ को भी सुन सकते हों। हाँ, आखिरकार अब वह उस स्पष्टता तक पहुँच गया था जिसे वह सारी उम्र तलाश करता रहा था – और उसे पता था कि अब उसे क्या करना है।

परन्तु दीवार में वह दरवाज़ा अब वहाँ नहीं था।

बिना नाम की नदी

(पेज 15 का शेष भाग)

इस कविता में नदी और झुम्मन मियाँ दोनों विस्थापन के शिकार हैं। भला कैसे? कविता की शुरुआत में ही कहा गया है कि नदी गाँव को चीरती हुई बह रही है। नदी गाँव के भूगोल को चीरती है तो याद आता है कि हमारे देश के भूगोल को भी एक रेखा ने चीर दिया है – देश के विभाजन की रेखा ने।

जिसने सिर्फ भूगोल को नहीं दिलों को भी चीर दिया है। दोनों तरफ के कट्टरपंथियों के कारण पाकिस्तान में हिन्दू और भारत में मुसलमान प्रेम व पहचान के लिए तरसते हुए दिखते हैं। झुम्मन मियाँ जैसे अनायास ही इस त्रासदी के शिकार लोगों के प्रतीक बन जाते हैं।

नदी भी अपनी तली और भूमिका से विस्थापित है। हमने उस हरियाली को नष्ट कर दिया है जो बारिश में मिट्टी को कटने से रोकती थी और पानी के बहने की गति को अवरुद्ध करती थी। अब बारिश मिट्टी को काटकर नदियों के तल में भर देती है। नदियों की क्षमता कम हो जाती है तो बारिश में बाढ़ आती है उधर भूगर्भ जल के नीचे उतर जाने से गर्मियों में नदियाँ सूख जाती हैं। इस तरह नदी और झुम्मन मियाँ दोनों अपने घरों में रहते हुए भी विस्थापित हो चुके हैं।

ये कविता जैसे एक शोकगीत है। इसमें झुम्मन मियाँ यदि नदी तट पर अकेले बैठे नदी के लिए एक नाम और अपनी अस्मिता की तलाश नहीं कर रहे तो और क्या कर रहे हैं!

मन की हर बात इकट्ठी की, इक बात बनाई मिट्टी की

टप टप टप टप करके मेरे टीन के शेड पर बारिश की बूँदें गिरना चालू हुईं। आवाज़ सुनते ही मैंने बादलों की तरफ देखा। ये सच में बरसेंगे या रोज़ की तरह कुछ छीटों के बाद हवा के साथ चल देंगे? मेरी मिट्टी बाहर सूखने के लिए रखी हुई थी। अगर बरसे तो मुझे उसे अन्दर करना होगा। हाँ! लग तो रहा है कि आज बादल ज़रा मेहरबान हैं। मैं जल्दी से बाहर गई और बोरों में सूख रही मिट्टी को खींचकर स्टूडियो में ले आई। बस उन्हें अन्दर लाई ही होंगी कि झमाझम बूँदें सूखी धरती में समाने लगीं।

मुदिता भण्डारी

चित्रः पंकज अग्रवाल और मुदिता भण्डारी

यह मेरा मनचाहा पल था। स्टूडियो से बारिश देखना, एक अलग ही दुनिया में ले जाता है। मैंने अपना काम प्लास्टिक से ढँका और स्टूल पर बैठ बूँदों को बेपरवाही से आसमाँ से निकलकर ज़मीन में समाता देखने लगी। सोचने लगी कि कैसे ये बूँदें बिना झिझके खुद को एकदम से छोड़ देती हैं। इतनी ऊपर से गिरते हुए उन्हें डर नहीं लगता? कितनी उत्सुक लगती हैं वो मिट्टी, पत्थर, पत्तों से मिलने के लिए! और उनके मिलने की खुशी जैसे आसपास के माहौल को भी खुशनुमा कर जाती है।

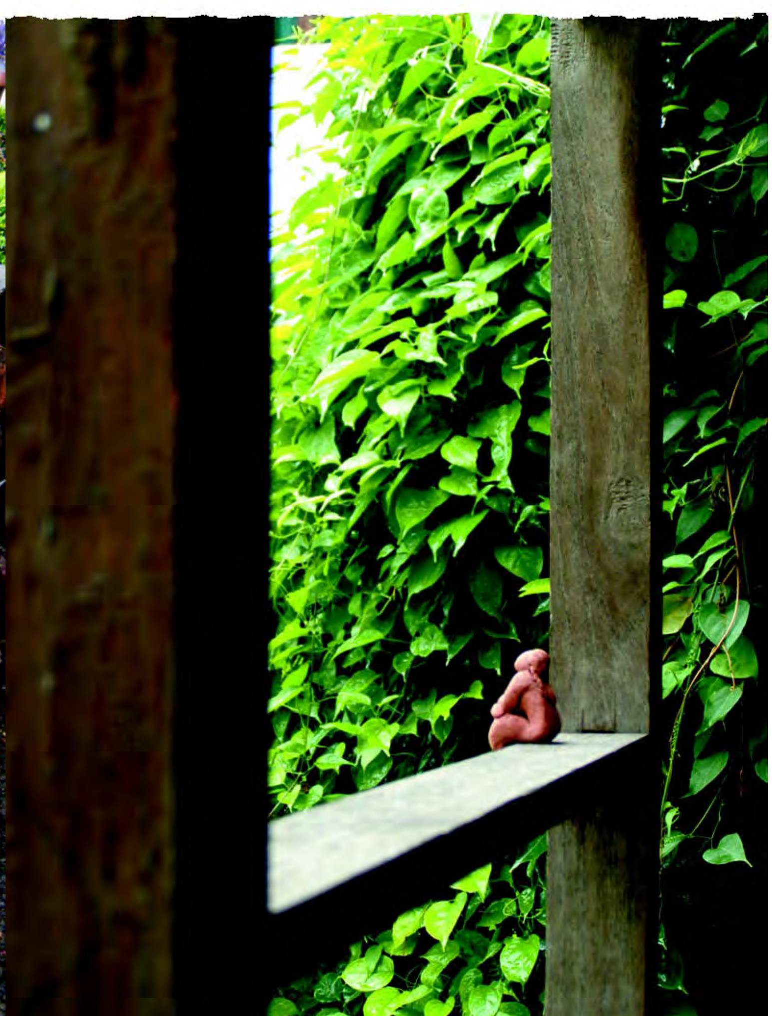

बचपन में एक कुम्हार को चाक पर कुल्लड़ बनाते देख मैं एकदम मग्न हो गई थी। गोल-गोल गोल-गोल चाक घूम रहा था। और मेरे मन में मिट्टी से कुछ बनाने की चाह आकार ले रही थी। छुटपन से ही मन में आता था कि जो मुझे पसन्द है, जिस चीज़ में मैं पूरी तरह डूब सकूँ, बस वही करूँ। उस समय मैंने सोचा नहीं था कि मेरा एक स्टूडियो होगा और मैं अपने पसन्द के काम से अपना जीवन चलाऊँगी।

मेरी माँ शान्तिनिकेतन से पढ़ी थीं। वो मूर्तिकार (sculptor) हैं और काँसे और लकड़ी की कलाकृतियाँ बनाती हैं। मैं शुरू में तो चाक से बहुत प्रभावित थी। उसमें काम करना मन को बड़ी शान्ति देता। लगता मानो मैं खुद से बातें कर रही हूँ। धीरे-धीरे मैं उसके गोल रूप (form) से बाहर निकलने लगी। मैं हाथों से मिट्टी की लम्बी-लम्बी बत्तियाँ (coil) बनाती और फिर उन्हें जोड़-जोड़कर शिल्प बनाती। इस तरह मुझे जो आकार या रूप देना होता, दे पाती।

मिट्टी एक बेहद लचीला माध्यम है। इसे जिस तरह हम चाहें इस्तेमाल कर सकते हैं। हाँ, उसे भट्टी में पकाते हैं, इसलिए कुछ चीज़ों का ध्यान रखना पड़ता है।

सबसे ज़रूरी बात है कि अगर तुम मिट्टी के काम में ही आगे बढ़ना चाहते हो तो तुम्हें उसे करीब से समझना होगा।

तुम्हें पता ही होगा कि सबसे पुरानी कलाकृति मिट्टी की ही बनी हुई है। पकाने के बाद इसे वापस गिली मिट्टी में बदला नहीं जा सकता है। इसलिए हम इसमें खाने की चीज़ें रख सकते हैं।

जब मैंने सिरैमिक की पढ़ाई शुरू की उस समय बहुत कम लोग इसके बारे में जानते थे। सिर्फ तीन आर्ट कॉलेज में यह कोर्स था। आज यह कला कॉलेजों के अलावा कलाकारों द्वारा सिरैमिक स्टूडियो में भी सिखाई जाती है।

इस कला में काफी कुछ किया है। इसमें सिर्फ मूर्तियाँ या काम में आने वाली चीज़ें ही नहीं डिज़ाइन भी बनाए जा सकते हैं। कोई चाहे तो प्रोडेक्ट डिज़ाइन भी कर सकता है।

लेकिन सबसे ज़रूरी बात है कि अगर तुम मिट्टी के काम में ही आगे बढ़ना चाहते हो तो तुम्हें उसे करीब से समझना होगा। जब तक हम मिट्टी के साथ अपने अन्तर्मन को नहीं मिलाते, तब तक हम जो कहना चाहते है वह मिट्टी कह ही नहीं सकेगी। मिट्टी खुद सिखलाएगी – न सिर्फ कलाकृति बनाना पर उसके साथ अपने आपको जोड़ना भी। शायद ये सब बातें सुनने में अजीब लगें लेकिन सच कहूँ तो हाथ में लचीली मिट्टी हो तो उससे जो सुकून और शान्ति महसूस होती है वह एकदम भीतर तक जाती है और न सिर्फ काम में झलकती है बल्कि ज़िन्दगी के हर पहलू में दिखाई देती है।

मिट्टी खुद तुम्हें सिखलाएगी – न सिर्फ कलाकृति बनाना पर उसके साथ अपने आपको जोड़ना भी।

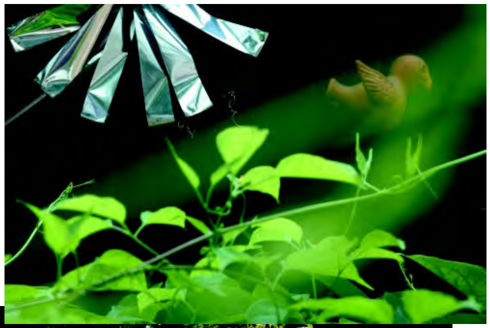

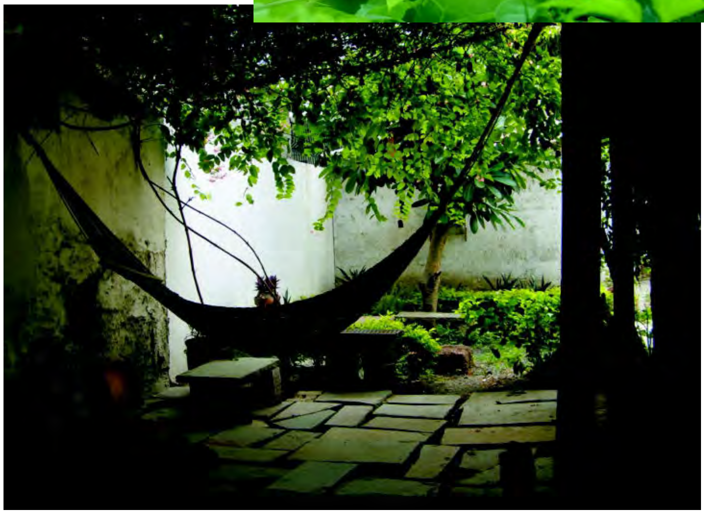

चाँद का ज़ीना

मैं जब सिरैमिक्स (मिट्टी के शिल्प बनाना) की पढ़ाई करने शान्तिनिकेतन गई तब केवल पन्द्रह साल की थी। पहले साल में आउटडोर स्टडी के लिए हमें बाहर भेजा जाता था। वहाँ हम ज़्यादा से ज़्यादा समय प्रकृति के बीच रहते हुए बिताते थे – कैसे हर पेड़ की पत्ती अलग-अलग होती है, कैसे चिड़िया पंख उठाती है तो उसका शरीर भी अपने आप ज़मीन से ऊपर उठ जाता है। खुले आकाश के नीचे एकदम मुक्त महसूस होता था, साथ ही अन्य सभी से जुड़ा हुआ भी महसूस होता।

हम सबके पास साइकिल थी। जब मन करता हम अपनी-अपनी स्कैच बुक उठाकर निकल पड़ते। सँकरी-सी एक सड़क थी। दोनों तरफ पेड़ और फिर एक तीखी ढलान। ढलान के बाद दूर-दूर तक खेत ही खेत। कभी-कभी हम अँधेरा होने के बाद लौटते। पेड़ों पर चमकते जुगनू ऐसे लगते मानो आकाश से तारे हमारे आसपास, पेड़ों पर उतर आए हों। चारों तरफ अँधेरा, गहरा नीला आकाश और छोटे-छोटे चमकते जुगनू। एकदम सन्नाटे में बस हवा और झींगुर की आवाज़ें सुनाई देतीं। साथ में हमारी साइकिलों की आवाज़ें भी होतीं।

आज एक शहर में उस खुले आकाश का एकदम मुक्त एहसास बहुत याद आता है। हम जब वहाँ रात को आसमान देखते तो मन कहता कि बस सीढ़ी लगाकर तारों तक पहुँच जाएँ। बस इसी एहसास को मुझे मिट्टी में बनाने का मन हुआ।

“स्टेप्स टू द मून” नाम के ये दो मूर्तिशिल्प इसी एहसास को दर्शाने की मेरी कोशिश है। जब इन्हें बनाने बैठी तो समझ में नहीं आ रहा था कि मैं अँधेरे और उसमें चमकते तारे कैसे दिखाऊँ। फिर एक तरकीब सूझी। क्यों ना एक सामान्य आकार के गमले के भीतर यह काम किया जाए! उसके अन्दर के अँधेरे को काम में लिया जा सकता है। फिर बस मैंने यह आकार बनाया। और उसके भीतर की दीवार में चाँद और तारे काट दिए ताकि जब बाहर की रोशनी वहाँ से झाँके तो लगे जैसे तारे चमक रहे हैं। फिर जैसे मुझे सीढ़ी लगाकर तारों तक पहुँचने का मन था वैसे ही मैंने इसमें सीढ़ियाँ बना दीं। यह मेरा तरीका था तारों तक पहुँचने का। और इस कलाकृति ने मुझे वहाँ पहुँचा भी दिया...

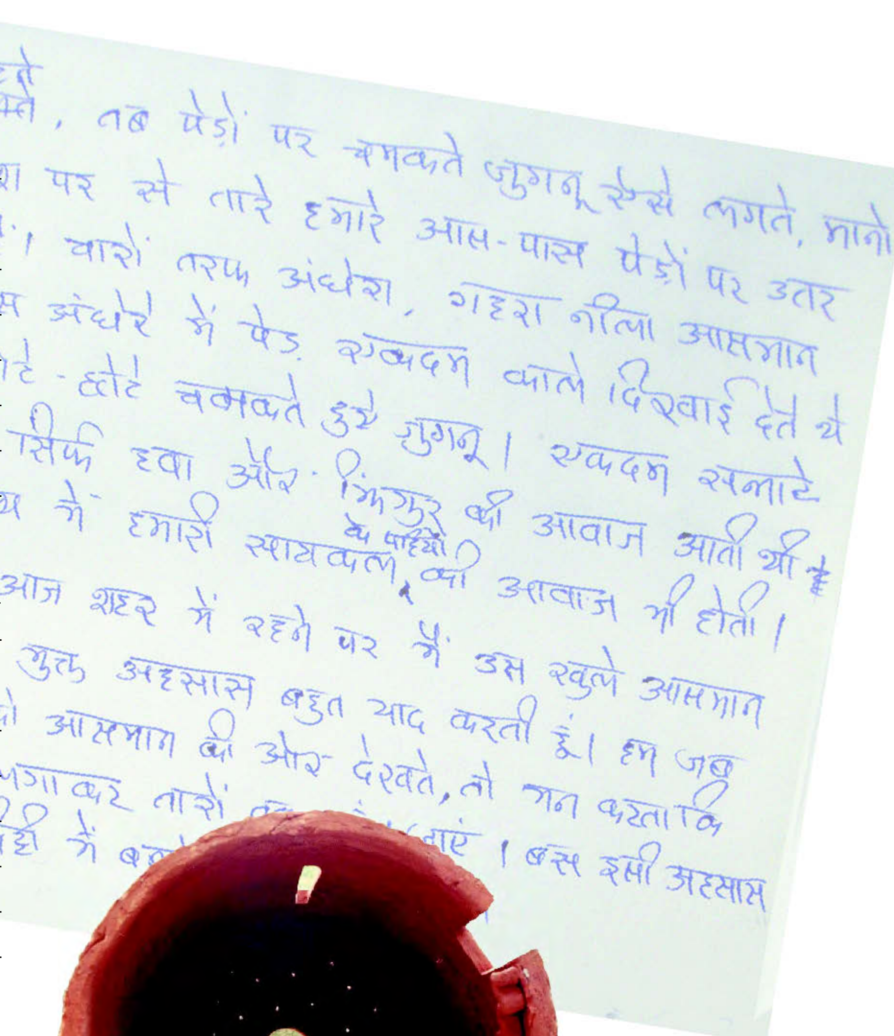

पत्ते की बात

बारिश का मौसम है। हर सू हरियाली ही हरियाली! ये सब हरियाली असल में पत्तियों से है। तो चलो आज इन पत्तियों को ज़रा गौर से देखते हैं। घर से थोड़ा बाहर निकल कहीं किसी नदी किनारे या बगीचे में चलते हैं!

सबसे पहले तो हम अलग-अलग तरह की पत्तियाँ ढूँढेंगे। हमें उन्हें सिर्फ ध्यान से ही तो देखना है इसलिए उन्हें तोड़ लेने की क्या ज़रूरत। नीचे गिरे पत्तों को इकट्ठा कर लेते हैं। इन्हें ध्यान से देखो। और इनका चित्र बना लो। इतनी अलग-अलग पत्तियों को देखकर तुम्हारा ध्यान उनकी कई सारी खासियतों पर जाएगा – उनके आकार में विविधता दिखेगी, पीपल की पत्ती की नोंक लम्बी और नुकीली दिखेगी पर जामुन की पत्ती उतनी नुकीली नहीं होगी। क्या पता तुम्हें ऐसे भी पत्ते मिल जाएँ जिनकी नोंक ही न हो!

इसी तरह हम पत्तियों के डण्ठल को भी देख सकते हैं। पीपल की पत्ती डण्ठल के पास दिल के आकार की होती है। तो देसी बादाम की पत्ती नुकीली होती नज़र आएगी। क्या हर पत्ते का डण्ठल होना ज़रूरी है? कोशिश करो कि पत्तियों के तुम्हारे खज़ाने में आकारों की ज़्यादा से ज़्यादा विविधता हो।

सिर्फ आकार (shape) ही नहीं इनकी किनार या सिरे (edge) का भी निरीक्षण करो। हर पत्ती की किनार सपाट नहीं होती। कुछ की आरी की तरह कटी-फटी या आरी के दाँतों जैसी (dented) होती है, तो कुछ की काँटेदार।

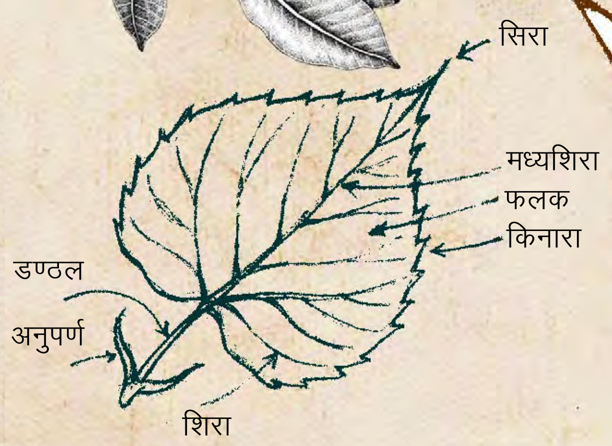

सभी चित्रः इन्टरनेट

आमोद कारखानिस

पत्तियों को छूकर देखो – कुछ चिकनी होंगी तो कुछ मुलायम। कुछ की सतह खुरदुरी होगी तो कुछ पर काँटे भी हो सकते हैं। जैसे कि बैंगन जाति के सभी पौधे।

पत्तियों की धारियों के पैटर्न में भी विविधता दिखाई देगी। क्या सभी पत्तियों में एक ही मुख्य धारी होती है या उसमें भी फर्क है? क्या ऐसी भी पत्तियाँ हैं जिनमें मुख्य धारी ही नहीं होती? या पत्ते की धारियों की जाली ही नहीं होती?

वैसे पत्ती की धारियों का पैटर्न देखने का एक मज़ेदार तरीका यह है – एक ऐसी पत्ती लो जिसमें धारियाँ साफ नज़र आ रही हों। उस पर एक पतला कागज़ रखो। जिस तरफ पत्ते की धारियाँ ज़्यादा उभरी दिखें उसी तरफ कागज़ ढँकना। और पत्ती की धारियों के पैटर्न को कागज़ पर उतार लो। जैसे तुम सिक्के के ऊपर कागज़ रखकर उसे पेंसिल से रगड़कर कागज़ पर उभारते हो!

अपने सारे अवलोकनों को, पत्तियों की धारियों के पैटर्न को ठीक से समेटो, उन्हें थोड़ा सजा दो और हमें भेज दो। साथ ही पत्तियों के साथ किए इस पूरे खेल के दौरान तुमने क्या-क्या खास अनुभव किया, क्या नतीजे निकाले वो भी हमें लिख भेजना।

पत्तियों के साथ यह हमारी पहली मुलाकात थी। अभी तो कई और मुलाकातें बाकी हैं। तो मिलते हैं अगले अंक में...

हर सू हरियाली है। घर से थोड़ा बाहर निकल कहीं किसी नदी किनारे या बगीचे में चलते हैं!

वे दिन

जैमन सिंह, बारहवीं, श्री राम स्कूल दिल्ली

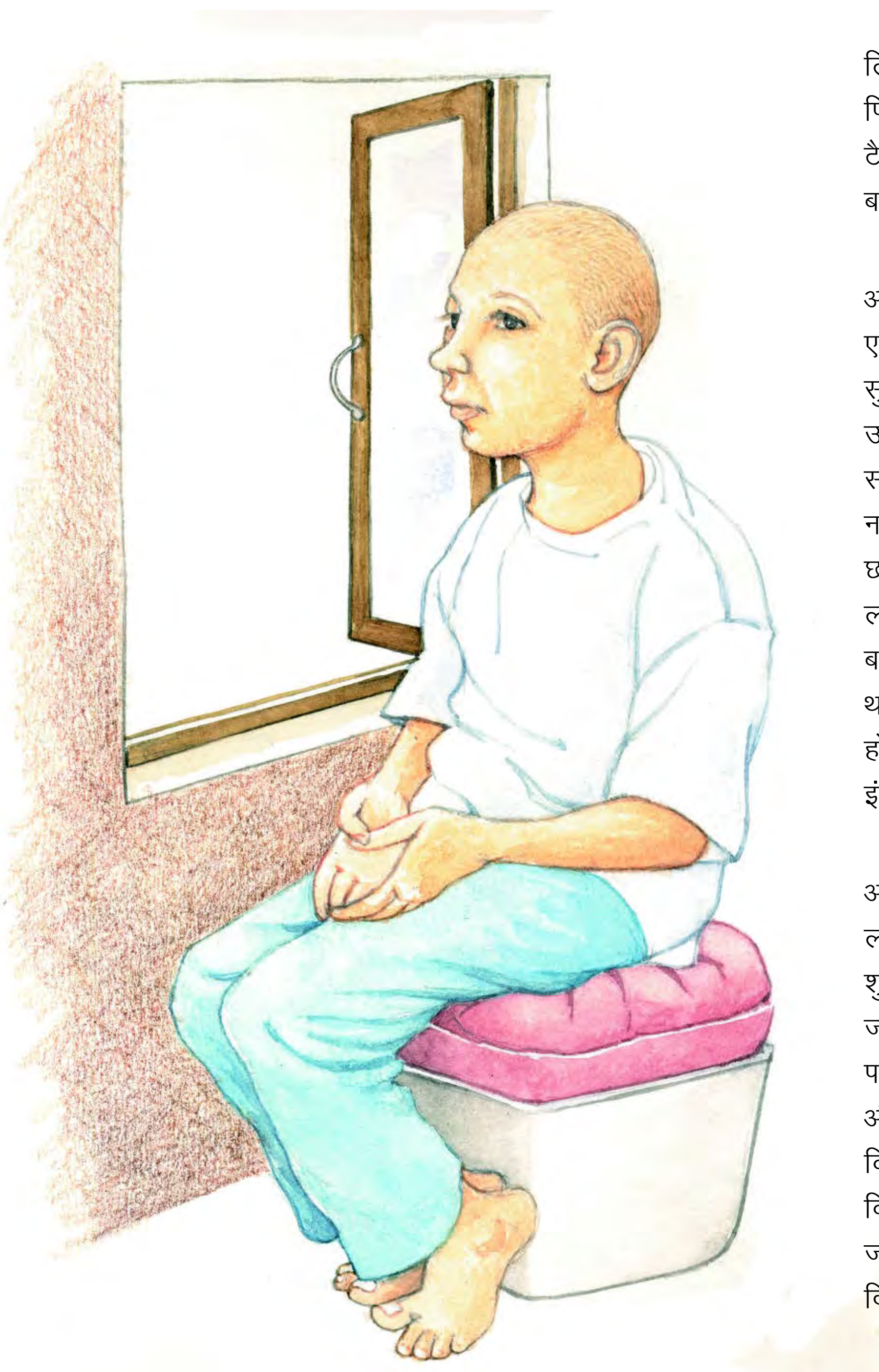

जूनियर स्कूल का वो मेरा आखरी स्पोर्ट्स डे था। हर साल मुझे गोल्ड मैडल मिलता था। लेकिन इस बार नहीं जीत पाया। इस बार तो बस किसी तरह दौड़ पूरी कर पाया। बुरी तरह थक गया था। टाँगें जवाब दे गई थीं। मैं सिल्वर मैडल ही जीत पाया। मैंने अपने मम्मी-पापा को देखा और सिर को झटकारा। मैं जानता था कि कुछ गड़बड़ है। वो भी जान गए थे कि कुछ तो गड़बड़ है। पर क्या गड़बड़, यह समझने में ज़्यादा वक्त नहीं लगा।

स्पोर्ट्स डे के पाँच दिन बाद पता चला कि मुझे एक्यूट लिम्फोब्लॉस्टिक ल्युकेमिया (ALL) यानी ब्लड कैंसर है। पिछले एक हफ्ते से मुझे बस हलका-हलका बुखार था। ब्लड टैस्ट हुआ तो मालूम पड़ा कि मुझे कैंसर है। तब मैं कैंसर के बारे में कुछ नहीं जानता था। मैं 11 बरस का था।

ब्लड टैस्ट में मेरे खून का पूरा लेखा-जोखा था। मुझे अस्पताल ले जाया गया। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था। एक के बाद एक डॉक्टर मेरी जाँच कर रहे थे। मुझे लगातार सुइयाँ लगाई जा रही थीं। आसपास का हर व्यक्ति मुझे उलझा-सा दिखता था। मम्मी बात बात पर रोने लगतीं। कुछ समझ नहीं आ रहा था। मैं बस एक कुर्सी पर बैठा रहता और नर्सें आ-आकर मेरी नसों से खून निकाल-निकालकर छोटी-छोटी शीशियाँ भर रही थीं। सच कहूँ मुझे सुइयों से डर लगने लगा था। बहुत तकलीफ होती थी। मुझे रोना आता था। मैं बस अस्पताल से भाग जाना चाहता था। मैं घर जाना चाहता था। हर बार मैं चाहता कि यह बस वो मेरा आखरी इंजेक्शन हो। पर तब क्या पता था कि ज़िन्दगी ने मेरे लिए और कितने इंजेक्शन लिखे हुए हैं!

मुझे अपोलो अस्पताल में भर्ती किया गया। पहली बार मैं अपने डॉक्टर से मिला। पहले तो वो मुझे बिलकुल अच्छे नहीं लगे। लेकिन आज मैं अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिए उनका शुक्रिया अदा कैसे करूँ। डॉ एल. एस. आर्य। उन्होंने मेरी जाँच की और एक कमरे में भेज दिया। वहाँ मैं अपने मम्मी-पापा के साथ रहा। रोज़ाना कितने ही लोग मुझे मिलने आते और ज़िन्दगी, भगवान, हौंसला, हिम्मत और ऐसी ही जाने कितनी चीज़ों के बारे में बातें करते। मुझे नहीं समझ आता था कि वो ऐसा सब क्यों बोल रहे हैं! मुझे ढ़ेर सारी दवाइयाँ दी जातीं। मेरे हाथ में हमेशा एक ड्रिप लगी रहती। मैं वहाँ सोलह दिन रहा और फिर मुझे अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।

चित्रः दिलीप चिंचालकर

वो रात मुझे अच्छी तरह याद है जब मुझे अस्पताल से छुट्टी दी गई थी। हमारे वहाँ से निकलने से ठीक पहले मम्मी-पापा मेरे बगल में बैठे। मेरा हाथ थामा और बोले कि मुझे कैंसर है। वे यह भी बोले कि मैं ठीक हो जाऊँगा पर मेरा इलाज काफी लम्बा चलेगा। मैं बस मुस्कराया और बोला, "हाँ, मैं ठीक हो जाऊँगा।" जबकि उस समय तक मैं कैंसर के बारे में कुछ नहीं जानता था।

पूरे सोलह दिन बाद मैंने वो कमरा छोड़ा था। मैं ठीक से चल भी नहीं पा रहा था। बेहद थकान थी। टाँगें काँप रही थीं। सीधा खड़ा होना तक मुश्किल था। मेरे दोनों हाथ सुइयों के निशान से भरे पड़े थे। जाँघों और रीढ़ की हड्डी पर भी ऐसे ही निशान थे। पर मुझे इनकी परवाह नहीं थी। मैं तो बस अस्पताल से निकल जाना चाहता था।

नौ महीने इलाज चला। मैं बेहद खुश था। वो मेरी ज़िन्दगी के सबसे मुश्किल नौ महीने रहे। कोई पाँच सौ से ज़्यादा इंजेक्शन मुझमें खोपे गए। मेरा शरीर कमज़ोर हो गया था। सेहत पूरी तरह बरबाद हो गई थी। कीमोथैरिपी के कारण मेरे बाल झड़ गए थे। रोज़-रोज़ की उल्टी-मितली ने मुझे थका दिया था। पर गनीमत है कि मेरा शरीर अब कैंसर-मुक्त हो चुका था।

अगले दो सालों तक अब तीन महीनों में केवल एक बार मुझे कीमोथैरिपी के लिए जाना होगा। उसके बाद दो साल और इन्तज़ार करना होगा। उसके बाद ही मुझे इस इलाज से पूरी तरह से छुटकारा मिलेगा। तभी मैं "कैंसर से जंग जीतनेवाला" कहला सकूँगा। इसके लिए कैंसर की खबर लगने से इलाज पूरा होने तक के बीच पाँच साल का फासला होना ज़रूरी है।

कैंसर से मुझसे बहुत कुछ छीना, मगर उससे कहीं ज़्यादा इसने मुझे दिया भी। कीमोथैरिपी ने मेरे शरीर को कमज़ोर कर छोड़ा था। मेरा शरीर टूट-सा गया था। पर इसने मुझे पहले से ज़्यादा मज़बूत बना दिया था। मैं अब ज़िन्दगी की, परिवारवालों की, दोस्तों की कीमत और शिद्दत से समझने लगा था। कैंसर ने मुझे वो बनाया जो मैं आज हूँ। उसने मुझे मुश्किल समय में भी हँसना सिखाया। कैंसर ने मुझे बताया कि कैसे हमारी ज़िन्दगी की हर चीज़ छीनी जा सकती है, सिवाए हमारी इच्छाशक्ति के। और यह इच्छाशक्ति ही है जिस से हमारी हिम्मत, हमारा हौसला तय होगा।

आज जब मैं मुड़कर देखता हूँ तो बुरे समय को याद नहीं करना चाहता। मैं प्यार और हँसी-खुशी के उन पलों को याद करता हूँ जो मैंने उस मुश्किल समय में जिए थे। मेरी मम्मी ने नौकरी छोड़ दी थी। वो रोज़ मेरे साथ *द सीक्रेट* पढ़ा करतीं। पापा अपना ज़्यादा से ज़्यादा समय मेरे साथ बिताते। हम हँसी-मज़ाक वाली फिल्में देखा करते। वे कहते कि खुशी से बढ़के कोई और नहीं जो कैंसर को भगा दे। मुझे अपनी बहन का डरा-सहमा चेहरा याद आता है जो सात बरस की छोटी-सी उम्र में यह सब समझने की किस कदर कोशिश करती रहा करती। वो समझ ही नहीं पाती कि अचानक ऐसा क्या हो गया कि अब वो घर की सबसे लाड़ली बच्ची नहीं रह गई। लेकिन बावजूद इसके मैं उसका बनाया कठपुतली का वो शो नहीं भूल सकता जो उसने सिर्फ मुझे खुश करने के लिए बनाया था। मेरी प्रतिरोधक क्षमता इतनी कम हो

मुझे अपनी बहन का डरा-सहमा चेहरा याद आता है जो छोटी-सी उम्र में यह सब समझने की किस कदर कोशिश करा करती।

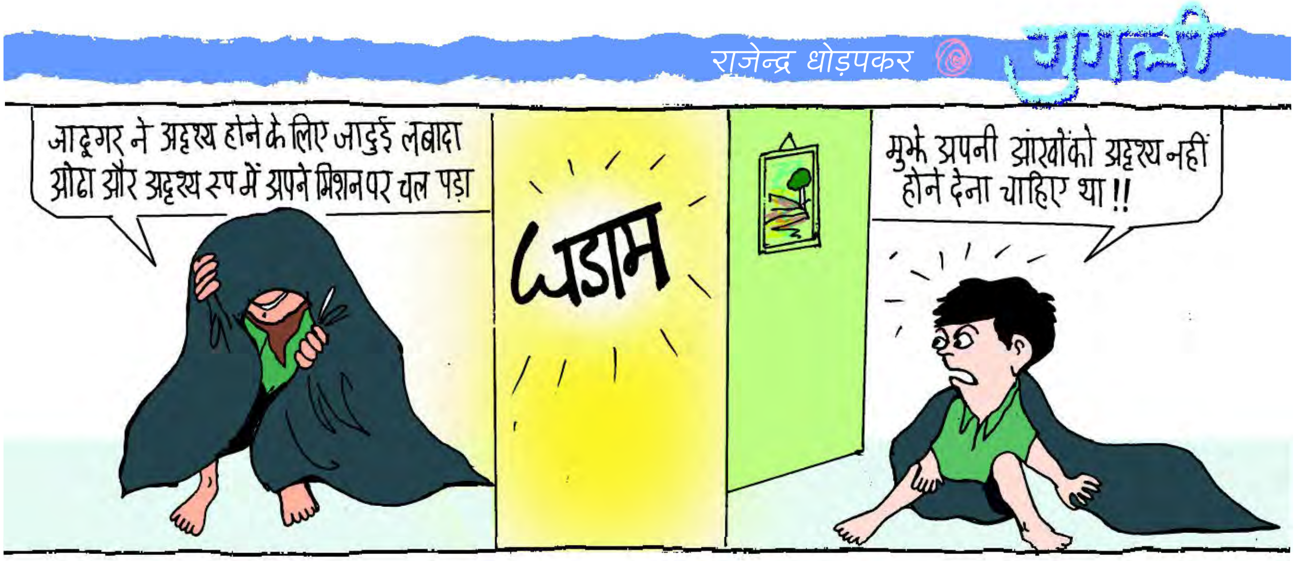

गई थी कि मुझे छूत का कोई भी रोग आसानी से हो सकता था। इसलिए किसी को भी मुझसे मिलने की इजाज़त नहीं थी। हम सब कई दिनों तक घर में ही बन्द रहे। मुझे याद है मेरे नाना-नानी मुझे देखने आए थे पर मुझसे मिल नहीं पाए। वे खिड़की के बाहर खड़े-खड़े ही मुझे हँसाने की कोशिश कर रहे थे। मेरा सबसे अच्छा दोस्त सिद्धार्थ इस दौरान पूरी तरह से मेरे साथ रहा। वो मुझसे बातें करता। जब भी उसे इजाज़त मिलती वो मुझसे मिलने चला आता। मुझे अजनबियों से भी इतना स्नेह मिला कि हैरत होती है। लोग खुद से फोन करते। कहते कि मुझे जब भी खून की ज़रूरत होगी वे देने को तैयार हैं। एक महिला जिनके बेटे को कैंसर था मेरे पास आईं और मुझसे बात की। उनका स्नेह मुझे हमेशा याद रहेगा। मेरा स्कूल, मेरे टीचर्स सब मेरे साथ बने रहे। पाँचवीं क्लास के आखिरी महीनों में स्कूल ना जा पाने के बावजूद मुझे सीनियर स्कूल में दाखिला दिया गया। एक दिन मैं सीनियर स्कूल में अपने दोस्तों से मिला। वहाँ एक अनजान महिला, जिन्हें पता भी नहीं था कि मेरे साथ क्या गड़बड़ है, ने अपने गले में पहना पेंडेंट उतारकर मेरी मम्मी को दे दिया। कैंसर से लड़ाई के पूरे पाँच साल तक मैं उसे पहने रहा। काश मैं उन अनजान महिला का शुक्रिया अदा कर पाता!

कीमोथैरिपी के उन ढाई सालों में कितनी ही जगहों से मुझे प्यार मिला – जहाँ उम्मीद थी वहाँ से भी और जहाँ उम्मीद न थी वहाँ से भी। चकमक

मेरा गाँव

–प्रस्तुतिः लीना साहू, चौथी, अज़ीमप्रेमजी स्कूल धमतरी, छत्तीसगढ़

आना मेरे गाँव
तुम्हें मैं दूँगी फूल कणेर के

कुछ कच्चे, कुछ पक्के घर हैं
एक पुराना बॉल है
सड़क बनेगी सुनती हूँ
इसका नम्बर इस साल है
चखते आना टीले ऊपर
कई पेड़ हैं बेर के

आना मेरे गाँव तुम्हें मैं
दूँगी फूल कणेर के

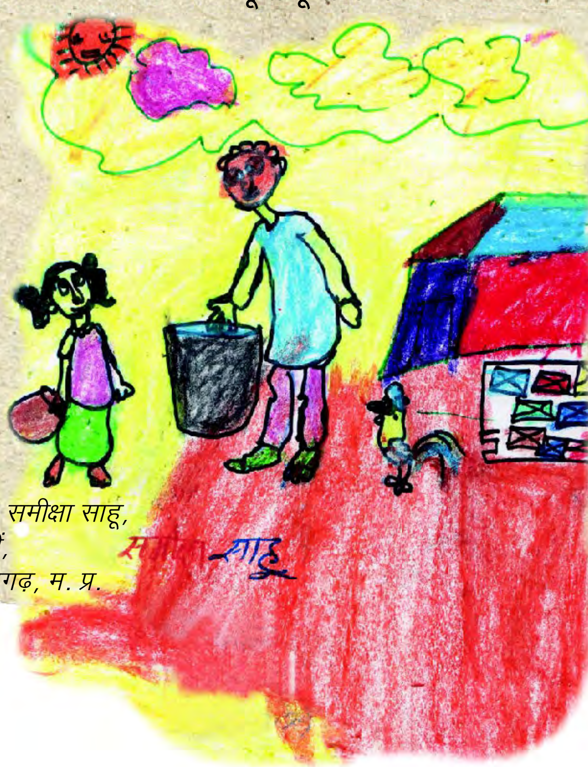

चित्रः समीक्षा साहू, पाँचवीं, टीकमगढ़, म. प्र.

सच्ची!

नादिर मोहम्मद तौफीक

15 साल, मिस्र

पिछली गर्मियों की बात है। मैंने एक घर किराए पर लिया। उसके पिछवाड़े में आम हैण्डपम्प जैसा एक पम्प था। पर वो काम नहीं कर रहा था। मेरा सबसे करीबी पड़ोसी कोई एक मील दूर रहता था। अगर मैं इत्ती दूर से पानी लाता तो रास्ते भर में छलक-छलककर आधा ही रह जाता।

तो मैंने सोचा अब कोई चारा नहीं है – अपने गणितीय ज्ञान का इस्तेमाल करना ही होगा।

मैंने एक बालटी ली। उसे उस हैण्डपम्प की टोंटी के नीचे रखा और पम्प के हैण्डिल को ऊपर-नीचे हिलाने लगा। इतने में हैण्डिल छिटककर अलग हो गया। मुझे स्क्रू से उसे कसना पड़ा। और फिर से हैण्डिल हिलाने लगा। देर तक हिलाने के बाद भी जो टोंटी से निकला वो थी एक मरी हुई मकड़ी। और थोड़ी देर बाद उसके मरे बच्चे भी निकले। अगले पाँच मिनट तक तो मैं ज़ोर-ज़ोर से पूरे दम-खम से हैण्डिल हिलाने लगा। तभी पानी के खिंचने की-सी आवाज़ें आईं और थोड़ा काला-काला-सा पानी भी निकला। उसमें एक मरा कीड़ा और कुछ सड़ी-गली पत्तियाँ तैर रही थीं। उसमें से बहुत ही गन्दी बदबू आ रही थी। पिछले साल भर या ज़्यादा से उसमें मरी या सड़ रही चीज़ों की मिली-जुली बदबू थी वो। मैंने फिर से लगभग दस मिनट तक उस पम्प को चलाया। पर कोई नतीजा न निकला। साफ था कि पम्प की मशीनरी में कुछ खराबी थी।

मैंने सोच लिया कि इस समस्या का हल तो ढूँढना ही है। मैं अन्दर गया और पाना-पेंचिस जैसे कुछ औज़ार उठा लाया। मैंने उस पम्प को पूरा का पूरा खोल डाला और फिर से जमा भी लिया। अब बस उसे फिर से पाइप में फिट करने का काम बचा था।

मैं पम्प की पाइप में पहली चीज़ डाल ही रहा था कि मैंने नीचे से आती एक अजीब-सी आवाज़ सुनी। तभी साफ पानी का एक बड़ा-सा फव्वारा हवा में छूट गया। और वो जो चीज़ मैंने अन्दर डाली थी वो उछलकर मेरे सिर पर आ गिरी। फिर क्या था पानी का सोता ही जैसे बह निकला था। मेरा पूरा घर पानी से भर गया। मेज़-कुर्सियाँ सब बहने लगीं। मैंने हथौड़ी से लकड़ी के एक टुकड़े को उस पाइप में ठोंकना चाहा पर वो बोतल में लगी कॉर्क की तरह उछल गया। पानी तो बस निकलता ही जा रहा था। जब मैंने अपना बैग उठाया और स्टेशन की तरफ भागा तो मैंने सड़क पर पानी की उस धार को तेज़ी से अपना पीछा करते पाया। इससे पहले की रेल की पटरियाँ तक पानी में बह जातीं मैं एक रेल में बैठा और वहाँ से निकल भागा। अगर तुम्हें नक्शे में कोई नई नदी नज़र आती है तो, मेरे ख्याल से उन्होंने उसे मेरा ही नाम दिया होगा।

शंकर्स वीकली में 1951 से 1954 के बीच छपी 56 देशों के बच्चों की कुछ उम्दा रचनाओं को 1956 में शिक्षा विभाग ने *चाइल्ड राइटिंग* नाम से प्रकाशित किया। इस प्रयास को सलाम! इसी गुच्छे की कुछ रचनाएँ अगले अंकों में पढ़ेंगे। कार्टूनिस्ट शंकर (पिल्लै) को याद करने का इससे बेहतर तरीका और क्या होगा!

चित्रः दिलीप चिंचालकर

माड़ की लोककथा

दो भाएली

चित्रः सुनीता

कुकुरमुत्तों के जंगल में एक चिड़िया रहती थी। एक कम पत्तोंवाले पेड़ पर चिड़िया का घर था। घर में वह केवल रात में ही रहती थी। सुबह पेड़ की टहनियों पर फुदकती थी और पत्तों पर झूलती थी। दोपहर में खाने-पीने के लिए ज्वार-बाजरे के खेतों की ओर उड़ जाती थी। शाम को आकाश में घूमती थी।

उस जंगल में कीड़े-मकोड़े और दूसरे जानवर भी रहते थे। सभी से चिड़िया की बढ़िया बोलचाल थी। एक बड़े पेड़ की मोटी जड़ों के बीच एक बिल था। यह सुरंग जैसा बिल चुहिया का घर था। पेड़ पर बैठी चिड़िया चुहिया को इस बिल में गायब होते और इससे बार-बार बाहर आते देखा करती थी। एक दिन चिड़िया ने कहा, "तुम देखते-देखते ज़मीन में गायब हो जाती हो, क्या यह मुझे भी सिखा सकती हो?"

"पता नहीं।" चुहिया ने कहा।

"क्या तुम्हारे इस बिल में उड़ने की जगह है?" चिड़िया ने एक और बात पूछी।

"उड़ने की नहीं है चलने-फिरने की है। तुम्हें केवल चलना-फिरना हो तो बता देना।" चुहिया ने कहा।

इसी तरह की बातचीतों से उनमें दोस्ती बढ़ी और वे पक्की भाएली बन गईं।

"मैं तो नदी पर पानी पीने जा रही हूँ। फुर्र गई और फुर्र आई।" चिड़िया ने कहा।

"पानी तो मुझे भी पीना था पर कैसे करूँ?" चुहिया ने कहा।

"कैसे भी मत कर। तुझे आने-जाने में बहुत वक्त लगेगा। इस डबरे से पी ले। तू रोज़ इसी से तो पीती है।" चिड़िया बोली।

"वो तो ठीक है।" चुहिया ने कहा। "तो फिर ठीक है मैं चले ही चलती हूँ।" ऐसा कहते हुए चुहिया चिड़िया के साथ हो ली।

नदी पर चिड़िया ने पानी पी लिया। चुहिया पानी पीने लगी तो फिसल गई और नदी में बहने लगी। चिड़िया ने उसकी पूँछ को चोंच में दबाकर उसे नदी में से निकाला।

"मैं नहीं होती तो तू अभी मर जाती।" चिड़िया ने फटकार लगाई।

"क्यों मर जाती। वो तो मैं तैरने के लिए उधर चली गई थी। जल्दी ही वापस आ जाती। तू क्यों बीच में दूल्हे की बुआ बनने के लिए वहाँ आई?" चुहिया ने ऐसा जवाब दिया कि बेचारी चिड़िया का मुँह उतर गया।

"मैं तो हरे-भरे झाड़ों की झिट्टियों में लाल बेर खाने जा रही हूँ। फुर्र गई और फुर्र आई।" चिड़िया ने कहा।

"तो चलो ठीक है मैं भी साथ चलती हूँ।" ऐसा कहते हुए चुहिया भी साथ हो ली।

चिड़िया तो झाड़ों पर उड़-उड़कर चुन-चुनकर मीठे बेर खाने लगी। चुहिया ने एक झाड़ी पर चढ़ने की कोशिश की तो उसका कान काँटे में उलझ गया। चिड़िया ने देखा चुहिया झाड़ पर लटक रही है और दर्द से चीख रही है। वह तुरन्त वहाँ आई और उसने चोंच से पकड़कर चुहिया के कान को काँटे से सुलझाया।

"मैं नहीं होती तो आज तो तू मर ही जाती। कुछ ही देर में कौए झपट कर ले जाते।" चिड़िया ने कहा।

"वो तो मैं खुद ही रुककर कान छिदवा रही थी। बाली पहनने के लिए। तू क्यों बीच में दूल्हे की बुआ बनने के लिए वहाँ आई। मैं तो आ ही रही थी।" चुहिया ने ऐसा जवाब दिया कि बेचारी चिड़िया का मुँह उतर गया।

"अरे वो धूल भरी गढार में कितनी सुन्दर गाड़ी चली जा रही है। मैं तो उस पर जाकर मौजी खाती हूँ। फुर्र गई और फुर्र आई।" चिड़िया ने कहा।

"तो फिर ठीक है मैं भी साथ चलती हूँ।" ऐसा कहते हुए चुहिया भी चिड़िया के साथ हो ली। चिड़िया तो गाड़ी पर बैठ कर हुमचती हुई मौजी खाने लगी। चुहिया ने चलती हुई गाड़ी पर चढ़ने की कोशिश की तो पहिए के नीचे दब गई। चिड़िया ने देखा उसकी भाएली तो धूल में बेहोश पड़ी है। वह उड़ती हुई वहाँ आई। उसने चुहिया के शरीर को हिलाया। रास्ते के बगल में बह रही नहर से पानी लाकर छींटे दिए। धीरे-धीरे चुहिया को होश आया। होश आते ही वह उछल कर खड़ी हो गई।

"मैं नहीं होती तो अभी तो तू मर ही जाती। धूल में बेहोश पड़ी थी। कोई चील उठाकर ले जाती।" चिड़िया ने कहा।

"वो तो पीठ दबवाने के लिए मैं खुद ही पहिए के नीचे आई थी। तू क्यों बीच में दूल्हे की बुआ बनने के लिए यहाँ आई। मैं तो आ ही रही थी।" चुहिया ने ऐसा जवाब दिया कि बेचारी चिड़िया का मुँह उतर गया।

तो ऐसी भाएली थी वे दोनों जिनमें ज़्यादा पटती नहीं थी पर वे एक-दूसरे के बिना रहती भी नहीं थी। चक मक

पुनर्लेखनः प्रभात

बोलीरंगोली

चुनिंदा आठ चित्र

रितिका पॉल, तीसरी, शिलांग

गार्गी यादव, पाँचवीं, डीपीएस, पटना

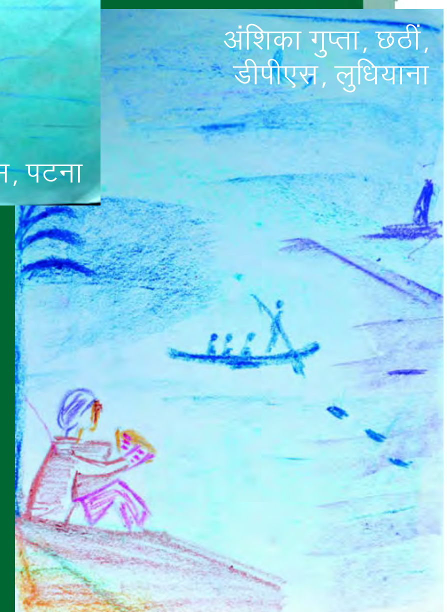

अंशिका गुप्ता, छठीं, डीपीएस, लुधियाना

चाँदनी, 13 वर्ष, मंज़िल, दिल्ली

श्रीमयी, पाँच वर्ष, गुड़गाँव

जोइता देब, पाँचवीं, शिलांग

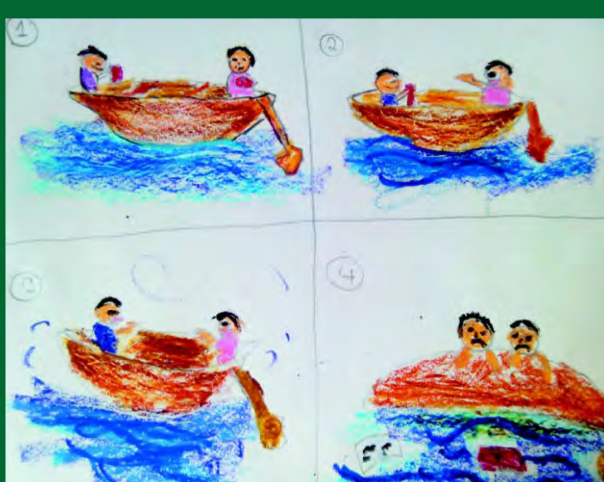

आयुष राजन, शिलांग

ज्ञानवी जैन, दूसरी, इन्दौर

माथापच्ची

2 क्या दिखाई क्यों नहीं देती?

1 कुर्सी की यह तस्वीर सामने से ली गई है या पीछे से?

3 नल से निकलती पानी की धार जैसे-जैसे नीचे आती जाती है वैसे-वैसे पतली होती जाती है। ऐसा क्यों?

5 ऐसा क्या है जिसे बिना छुए तोड़ा जा सकता है?

4 मायरा के पास अलग-अलग रंग की 4 रंगीन पेंसिलें और 2 बक्से हैं। इन चारों पेंसिलों को 2 बक्सों में इस तरह रखने के कितने तरीके हो सकते हैं कि हर बक्से में कम से कम 1 पेंसिल ज़रूर हो।

6 एक ऐसी चीज़ है जिसे चाहे तुम कम इस्तेमाल करो या ज़्यादा लेकिन उसे बदलना हर माह पड़ता है?

7 एक ही संख्या को तीन बार जोड़ के चिन्ह के साथ इस्तेमाल कर 60 उत्तर लाने के दो तरीके हैं। तुम्हें पता हैं यह तरीके?

चार पैर की एक सवारी,
थके हुए को लगती प्यारी।
देती है आराम सभी को,
लकड़ी की यह राजकुमारी। (कुर्सी)

यह पहेली दिया शाह, चौथी,
डी पी एस लुधियाना से प्राप्त हुई है।

अगस्त की चित्र पहेली हल

ति	त	ली		चौ	पा	या		धा
रा			टं	की			पा	न
हा	पु	ड़		दा	ल	ची	नी	
	ला		ता	र		त		चि
आं	व	ला			छा	ल		ड़ि
		लि	फा	फा			दि	या
प	जा	मा		व	ज़	न		घ
तं			जू	ड़ा		गा	ज	र
ग	त्ता		ही		घ	ड़ा		

नाव

अनमित्र राय

चित्रः सौरेन मित्र

भोर का सपना जब खत्म होने को था, ठीक उसी समय से आज खूब बारिश है। आज स्कूल जाना सम्भव नहीं। आज "रेनी डे"।
दोपहर में गर्म खिचड़ी और अण्डा फ्राई।
ज़रा देर में बाजू की पतली गली में पानी जमा हो जाएगा।
पिछले साल की बांग्ला और अँग्रेज़ी की कॉपियाँ ढूँढ निकालता हूँ।
नावें बनाऊँगा। एक गुच्छा अक्षरों से सजी होंगी नावें। पानी में बहा दूँगा उन्हें।
इसके बाद एक अलग गति, एक अलग छन्द। चलते-चलते एक नाव झुक गई। बाकी उसकी परेशानी देख कुछ ठिठक गईं। आगे जाएँ कि न जाएँ?
घर के अन्दर से पुकार सुनाई देगी। दौड़ा जाऊँगा।
माँझी के बिना नावें दिशाहीन हो जाएँगी।
उनकी साज-सजावट भी तब तक बिगड़ चुकी होगी।
अक्षरों को बारिश पसन्द नहीं है क्या?

बांग्ला से अनुवादः टुलटुल विश्वास

मुनिया दीदी, डब्बू और रघु राय

दिलीप चिंचालकर

"काम के नाम से महारानीजी को बुखार आ जाता है।"

रसोई में अम्मी भुनभुना रही थीं। जब वे गुस्सा होतीं तो मुनिया दीदी को महारानी कहतीं और लाड़ से मुझे सदा ही राजा बेटा कहतीं। अपने हठ के लिए मैं मुनिया दीदी को डाँट पिटवाने से भी नहीं चूकता।

उस दिन उनका नया नीला छाता मैं ले उड़ा ताकि उन्हें एक जर्जर काला छाता स्कूल ले जाना पड़े। उस दिन दीदी स्कूल से गीली होकर लौटी। मैंने यों ही कह दिया कि दीदी फटा-पुराना छाता खोलने के बजाए भीगना पसन्द करती है। उसी शाम दीदी को तेज़ बुखार चढ़ आया था।

बीस बरस से ऊपर हो गए इस बात को। यह चित्र देखकर मुझे लगा कि मैं ही वह बेसुरा संगीत मास्टर हूँ और सामने चुपचाप भीगती लड़कियों में एक मेरी मुनिया दीदी है।

यह तस्वीर रघु राय ने खींची है। कितने सही समय पर यह फोटोग्राफर अपना कैमरा लेकर मौके पर आ धमका है। इसे टाइम्स ऑफ इण्डिया अखबार ने अपने बड़े-से विज्ञापन में छापा है। शायद अपने विषय को ठीक चौखट में बाँधकर सही समय पर कैमरे को दिखलाने से ही अच्छी तस्वीर बनती है। हमारे अच्छे-बुरे, सुहावने-दुखियारे क्षणों को सदा के लिए सहेज कर रखनेवाली तस्वीर।

D - 76136 दिनांक - 11/7/2014

चित्र पहेली

▶ बाएँ से दाएँ ▼ ऊपर से नीचे

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र./261/भोपाल/2012-14

दोस्तो,

अगला अंक अक्टूबर-नवम्बर का जुड़वाँ अंक होगा। सामान्य अंक से दो गुना मोटा। यह अंक 25 अक्टूबर को प्रकाशित होगा। इसमें साठ से ज़्यादा रचनाकार शिरकत करेंगे। तुम्हारे बनाए चित्रों पर खासतौर पर सामग्री होगी। जाने-माने चित्रकार, लेखक, कवि, शिल्पकार, सिनेमा से जुड़े लोग, फोटोग्राफर, कला-समीक्षक तुम्हारे चित्रों पर विचार करेंगे।

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म.प्र. से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोनः 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादकः सुशील शुक्ल